रथक चक्का उलटि चलै बाट

राम विलास साहु

श्रुति प्रकाशन, नई दिल्ली

Rathak chakka ulati chalai baat: Anthology of Maithili Poems, Tanka, Haiku by Ram bilas Sahu first published in 2012, by M/s Shruti Publications, India
Price: Rs. 100

पहिल संस्करण : 2013
ISBN : 978-93-80538-69-3

श्रुति प्रकाशन : रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११)२५८८९६५७
Website:http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com
Printed at: Ajay Arts, Delhi-110002
Distributor : *Pallavi Distributors*, Ward no- 6, Nirmali (Supaul), मो.-9572450405, 9931654742
Rathak chakka ulati chalai baat: Anthology of Maithili Poems, Tanka, Haiku
by
Rambilas Sahu

एकसत्तरि-

जीबैले
चैताबर गीत
चैती गीत
प्रेमक भूखल
मरूआक मान
अरमान
भारत माता
परदेशी
मोनक बात की कहब
धनरोपनी
लफंगा
बेरोजगारी
रूपैआक ढेरी
भ्रष्टाचारी
आएल वसन्त
अप्पन-पराया
बाट बटोही
हाटक चाउर बाटक पानि
ज्ञान बाँटैत चलू
प्रेम आकि पैसा
कालक पहरा
पियासल मन
दहेजक खेल
घर परदेश
गहुमक कटनी-दौनी
बिआह की थिक?
आजुक दिन
पुत्र कुपुत्र

कतेक दुख काटब हरि हे
बारहो मास
सड़क बीच नाला
आँखि रहितो आन्हर
भाग भरोसे
फूल-पत्ता
भदबा
बाबा बले फौदारी
केकरा ले कानब
परिवर्त्तन
माइयक ममता
परदेशिया पाहुन
धरतीक सुख
सौनक राति
लोभी भोम्हरा
भोरक क्षण
गरीबक मान
माए
हमर गाम घर
अगिलगी
काली मैयाक गीत
हमर बिखरल समाज
चिड़ै चुनमुन्नी
माइक लाल
के गरीब?
नैनाक खेल
कोइली कूहकै आमक डारि

नींदिया बैरी भेल पहुना
पागल प्रेमी
कोसीमे समाएल जिनगी

हइकू/ टनका

महगाइ

महगाइ अहाँ केतएसँ आ किए एलौं
आकि जबरदस्ती हमरा देशमे घुसि एलौं
अहाँ विदेशमे भलहिं छेलौं
के अहाँकेँ बजेलक आकि भूलसँ एलौं
अहाँ अबिते हमरा देशमे आगि लगेलौं
नोन शुन्य भऽ गेल
तेल केतए गेल पता नै भेल
हरदी कीनैमे हड्डी टूटि गेल
मशालासँ मन फीर गेल
पिऔज-लहसुन सोना भाव बीकि गेल
पेट्रौल-डिजल आसमान चढ़ि गेल
अहाँक मारिसँ देह टूटि गेल
महगाइ कहलक-
“किए हमरा दइ छी दोख
अहाँ सभकेँ नै अछि होश
अहाँक देशमे होइए बड़-बड़ घोटाला
हमरा बजा कऽ लाबलक घोटालाबला
आब हम अहाँ देशकेँ बना देब दिवाला
खून बेचबा देत विदेशबला
नेता आ अधिकारी भऽ जाएत मालबला
सभ जनता बनब बेचारा-बेसाहारा।”

अहाँ हमरा सभकेँ किए बनेलौं दिवाला
महगाइ अहाँ केतएसँ एलौं, किए एलौं...।
❍

कोइली कुहकै आमक डारि

कोइली कुहकै आमक डारि
सुनि हमर मनुआ घबराए
पिया हमर रहितए तँ
धीरज दैताए बन्हाइ
अन्हरिया राति हम
बाट देखैत दुनू आँखि निहारि
इजोरिया राति हम चान देखैत
चकवा-चकोर बनि जाइत
चन्दा बादल लुक-छुप खेले
पिया रहितए तँ हमहूँ
संगे खेलतौं वहिने
कोइली बोलीसँ हमरा
दिलमे लगैए गोली
पिया रहितए तँ किछु कहबो कैरतौं
अनका केना किछु कहबै
पिया परदेशिया बड़ निरमोहिया
कहिया बनत हमर रखबैया
कोइली बोली सुनि हमर
देह भऽ जाइए बहिर
केकरा कहबै ई दूखक बात
कोइली कुहकै आमक डारि।
❍

प्रीतक गीत

फागुन मास हमर बितए यौवनमा
हमर दुख कहिया हरत सजनमा
गौना कराए लिअ एबकी फगुनमा
आमक गाछपर बैसल कोइली
प्रीतक गीत सुनबए एबकी फगुनमा
चैत मास जेना टपकै महुआ
ओहिना टपकै हमर यौवनमा
सौनक मेघ भिजबए बदनमा
बिजली चमकए बादल बरसै
देहसँ छुटै पसिनमा
बरखा बरसै घनघनमा
पिया बनल अछि बैमनमा
ऊमड़ल नदिया, दरद जगाबए
दरदक दुख केना केकरो कहबै
आबिते सजनमा दरद हरि लैत फगुनमा
गौना कराए लिअ एबकी फगुनमा
प्रीतक गीत सुनबै छी सजनमा।
❍

गंजन

बड़-बड़ गुड़ गंजन सहैए
मिश्री नाओं धड़बैए
पीटि-पीटि सोना आगि तपि
कसौटी रगड़ि चमकैए
चौदह बरख वन घुमैत
वनबासी जिनगी बितबैत
पुरुषोत्तम राम कहबैए
केकरा कहबै सुख-दुख
दुखसँ उपजए सुख
दुखियाक सारथी भगवान बनैत
सुखिया गंजन सहैत
अज्ञात बास काटैत पाण्डव
नित हरि दर्शन करैत
सुखियाक साथी सभ बनैए
दुखियाकेँ ने कोइ
दुखक अंत एक दिन होइए
सुखसँ संकट बढ़ैए
बड़-बड़ गुर गंजन सहैए
मिश्री नाओं धड़बैए।
❍

कर्मक फल

कर्मक फल अवश्य मिलै छै
जानि-बूझि जौं करै छै हानि
होइ छै धन जन अभिमानक हानि
सभ तरफ होइ छै नकिहानि
काज नै होइ छै छोट-पैघ
कर्मसँ लोक होइ छै छोट-पैघ
जेहेन सोच ओहेन काज होइ छै
भावनाक संग भाव नदी सन बहै छै
सभकेँ सुख मिलए, दुखक अंत होइ छै
कर्ता पुरुषक पूजा सभ करै छै
कर्मसँ भाग्य बदलै छै
कर्म पूजा कर्म महान
जगतमे होइ छै अमर नाम
सूतल जागलमे फर्क होइ छै
सूतलमे भाग्यक विनाश होइ छै
जागल पुरुषकेँ नाश नै होइ छै
कर्मक फल अवश्य मिलै छै
जानि-बूझि जौं करै छै हानि।

❍

प्रेमक बान्ह

आशा-निराशा भेल पिआ
कतेक दिन रहब अहाँ परदेश
आँखिक नोर बहए दिन-राति
सबूर बान्हि जीबै छी कहुना
दिल धक्-धक् करैए अहिना
धैर्य टूटि गेल हमर करम फूटि गेल
सोगमे रोग बढ़ि रहैए
तन धधकैए मोन बरसैए
आँखिसँ बहैए निरंतर नोर
किए तरसाबै छी दिल हमर
छन-छन बितैए जिनगी अनमोल
कि राखल छै परदेशमे
आउ मिलि रहब अपने घरमे
नारी-पुरुष जिनगीक दुपहिया छी
दुनू मिलि गाड़ी समरूप चलै छै
परिवार समाजक निर्माण होइ छै
देशक प्रगति दिन-राति होइ छै
जल्दीसँ लौटू अपन देश
सभ दिन काज नै देत परदेश
कतेक सबूर बान्हब हम
दिलक अरमान सभ चूर भल गेल।
बिनु प्रेम जिनगी बेकार अछि
प्रेमक बान्ह सभ बान्हसँ मजगुत
नै तोड़ि सकै छै कोनो काल
जहिया तक संसार रहत

सुरुज-चान गबाह रहत
प्रेम अविनासी अमर रहत।
❍

जीबैत चलू

जीबैत चलू
खाति-पीऐत चलैत रहू
सत्यक राह पकड़ैत चलू
जिनगी अमर नै होइ छै
नीक काज करैत चलू
जीबैत चलू।

कर्म अमर होइ छै
जिनगी ओहीले मिलै छै
सत्यक बाटपर
ठोकर बड़ लगै छै
गिड़ैत-पड़ैत चलैत रहू
जीबैत चलू।

जाधरि सांस चलैत रहत
संसारक जाल बढ़ैत रहत
माया ममतासँ दूर रहू
अनकर धनसँ परहेज करू
जीबैत चलू।

जिनगी जीबाक लेल नै
नीक काज लेल होइ छै
कर्म-सुकर्म संगै जाइ छै
सभ किछु अहीठाम रहि जाइ छै
कर्मक फल बाटैत चलू
सबहक हीत करैत चलू

किछु करैत चलू
जीबैत चलू।
❍

बिसरल गीत

कोइली बैसल
आमक डारिपर
झूलि-झूलि गाबए
बिसरल गीत
सूतलमे जगबए नीन
मधुर गीतक स्वर सुनि
मोन भेल विभोर
बेर-बेर कोइली
सुनबए दुख भरल सनेस
बिसरल प्रेमक सिनेह
दिलक दरद रहि-रहि जगए
पिआसँ कहिया हएत भेँट
बिसरल गीत
मौलाएल मोन
सुक्खल तन
जेना उजरल वन
कहिया हरिअर हएत
ई प्रेमक बंधन
कोइली सुनबए बेर-बेर
बिसरल गीत।
❍

जरैत दीप

आगिसँ आगि जरैत
पानिसँ मेटैत पिआस
दीप जरैत आगिसँ
हवा दइ छै मुझाए
जरैत दीप अपन ज्योतिसँ
जगमग करैत जगत
घूरक आगि रसे-रसे सुनगि
हवासँ नै मुझाए
जौं मुझाबए हवा घूराकेँ
सुनगि जरबए जगत
आगि नै जानए भेद
सभकेँ जरबए एक्के संग
जीनगी अछि दू-चारि दिनक
फेर हएत अनहरिया राति
कर्त्तव्य-धर्मक पालन करैत
पथपर चलू दिन-राति
चलैत रहू जाधरि अछि जिनगी
जहिना दीप जड़ै छै
ताधरि तेल रहै छै बाती संग
अपन जिनगीक अनहरियामे
दोसरकेँ राखए इजोरियामे
तहिना मानव, मानव लेल
उपकार करैत जरैत रहू
जाधरि लहू अछि अहाँ संगे।
❍

गामक नारी

मन्द मन्द हवा सिहकए
फूलक पंखुरी झरि-झरि गिरए
छने-छन मौसम बदलए
कखनो रौद कखनो छाह पड़ए
बिनु वसन्त बहार बनए
खेतक आड़िपर गामक नारी
कनियाँ-बहुरिआ नवतुरिआ
फाँढ़ बान्हि खेतमे काज करए
भूलल-बिसरल सोहर-समदौन
बिरहा-विदेशिया गीत गाबए
बाट-बटोही सुनि-सुनि
बाट भूलि लजाइ छेलै
कहैत बाट चलैत छेलै
गामक नारी-
देशक छी हितकारी
देशक निर्माणमे
करैत अछि साझेदारी।
❍

पियासल धरती

पियासल धरती तड़सि रहल अछि
काल-कोठरीमे छिपल बदरिया
धरती सूखि दड़ारि पड़ल अछि
सूखि दुबैक कमजोर पड़ल अछि
गरमीसँ हाहाकार मचैए
चिड़ै-चुनमुन मुँह खोलि बैसल अछि
घास-पात सूखि जरैत अछि
चास जरैत देखि खेतिहर
माथपर हाथ लऽ सोचि रहल अछि
पानि-बिनु जिनगी तड़पि रहल अछि
माल-जाल भटकि मरि रहल अछि
पोखरि-झाखरि डबरा-नदी सूखि रहल अछि
नाओं-निशान मिट रहल अछि
सूखि-सूखि धरती फाटि रहल अछि
पिआसल धरती तड़सि रहल अछि
निर्दय छल मेघ मुदा दयावान भेल
गरजैत-बरसैत कारीमेघ ऊमरल
पानि बरिसल घन-घोर
फाटल दरारिसँ-
बेंगक बरियाती सजि निकलि पड़ल
सभरंगा गीत उछलि-कुदि गाबए लगल
कारी मेघ झुमि-झुमि बरसि रहल अछि
धरतीक पिआस मरि रहल अछि
धरतीक पिआस मरि रहल अछि।
❍

चिंता-चिता

आगि जरैत सभ देखै छै
दिल जरैत ने देखै कोइ
चिंता-चितामे अन्तर छै
चितापर मरल जड़ै छै
चिंतामे जीविते जड़ै छै
समुद्र उधियाइत सभ देखै छै
दिल उधियाइत ने देखै कोइ
लकड़ी जड़ि कोइला बनै छै
कोइलामे हीरा खोजै छै
चिता जड़ि सदगति मिलै छै
चिंतामे जड़ि मणी खोजे छै
बिनु चिंता नै दुनियाँ चलै छै
चिंतामे लोक सभ दिन जड़ै छै
चितामे अन्त होइ छै
चिंता सभ जीबैत करै छै
चितापर मरल चढ़ै छै
आगि जरैत सभ देखै छै
दिल जरैत ने देखैत कोइ।
❍

मातृभूमि

हमर मातृभूमि
जानसँ अछि प्यारी
खूनसँ भीजल धरती
पवित्र भूमि सजल वन
उजाड़ि बाँटै छी क्यारी
हमर मातृभूमि
धन सम्पतिसँ भरल-पड़ल
नीत दिन सोना उगलैए
खाए-पीब कऽ फूलै-फड़ै छी
हम सभ मिलि ओकरे विनाश करै छी
हमर मातृभूमि
जानसँ अछि प्यारी
निवारण नै उजाड़न छी
विनाशक कारण हम सभ छी
अपन मातृभूमिकेँ
अपनेसँ विगाड़ै छी
निर्मल भूमि हवा-पानि
प्रकृतिक रचनाकेँ बिगाड़ै छी
मातृभूमि बँचेबाक लेल
अपन भूमिकेँ रक्षा-सुरक्षाक
नित्य करू तैयारी बनू पूजारी
हमर मातृभूमि
जानसँ अछि प्यारी।
❍

मिथिलाक अभिनंदन

नीत भोरे सुरुज करए
मिथिलाकेँ अभिनंदन
साँझ करै छै तरेगन-चान
भरि राति जगि-जगि
भगजोगिनी करै अभिनंदन
मिथिलाक भूमि महान
माटि-पानि अमृत समान
भोरे पूर्बा साँझ पछिया
करै छै मिथिलाक अभिनंदन
मिथिला सन पावन धरती
नै छैक दुनियाँमे आनो ठाम
डेग-डेगपर पानिक खान
पोखरि-झाखरि नदी छै अम्बार
कोसी-कमला-तिलयुगा
गंडक-बागमती-भूतही-बलान
गाम-गाम अछि दलान
अन्न-जल-फलसँ भरल
घर-घरमे अतिथि मेहमान
स्वागत होइ छै देवता समान
तीनू लोकमे होइ छै गुणगान
मिथिला अछि महान
रंग-बिरंगक फूलपर
भौँरा करै छै गुणगान
बगिया-बगिया कोइली कुहकैए
मोर-पपीहा-मेना-बुलबुल
कुदकि-चहकि सुनबए मिठि बोल

सभ नीत-दिन सुति-उठि
माथपर लगबैए माटिक चंदन
मिथिलाकेँ करैए वंदन
मिथिलाकेँ अभिनंदन।
❍

ई की केलौं अहाँ

ई की केलौं अहाँ?
अपन रहितो विरान भेलौं अहाँ
जीबैत छेलौं जिनगी जरा देलौं अहाँ
ई की केलौं अहाँ?
नामी छेलौं वदनाम केलौं अहाँ
गम भुलबै खातिर छिप-छिप मिलै छेलौं अहाँ
ई की केलौं अहाँ?
ई हालति हमर किए केलौं अहाँ
जीबतेमे हमरा जरा देलौं अहाँ
ई की केलौं अहाँ?
दिलक दर्पणमे झाकि-झाकि देखू अहाँ
हम कण-कणमे समाएल छी लहू जेना
ई की केलौं अहाँ?
शोक सागरमे डुमल छेलौं कहुना
नागीन बनि हमरा कटलौं केना
ई की केलौं अहाँ?
खूब सुरत हसीन पड़ी जेना
मुस्कीआइत हँसै छी गुलाबक कली जेना
मुर्दा आँखि खोलि ताकए चकोर जेना
ई की केलौं अहाँ?
❍

केकरा संग खेलब होरी

बाट तकैत भरि-भरि राति जगैत
आँखिया भेल लाले-लाल
कतेक पतझर बीतल
कतेको आएल वसन्त-बहार
सभ सखी-सहेली मिलि
फगुआ गाबए खुशी मनाबए
पिआ संग खेलै होरी
हमर पिआ परदेसिया
केकरा संग खेलब होरी
सभ मिलि रंग-अबिर उड़ाबए
हमरा कहि-कहि लजाबए
केना भीजलो तोहर चोली
ननदि-लजाबए देवरा सताबए
केकरा संग खेलब होरी
नैना-भुटुका टोली बनि
मिठगर बोलीसँ गाबए होरी
रंगक पिचकारीसँ रंग बरसाबए
जहिना खेलैए
राधा-संग कन्हैया होरी
राम-लखन खेलै
अवधमे होरी
ढोल-मजीरा ढाक डफली
पिट-पिट गाबए होरी
रंग-अबिर गुलाल उड़बैत
सभ मिलि खेलए होरी

रंग-बरसै मोन तड़सै
आँखिया भेल लाले-लाल
कहिया आएत परदेसिया
मिलि संगे खेलब होरी
बिनु पिया तड़सै छी हम
केकरा संग खोलब होरी।
❍

गाए-माए

गाएकँ माए सभ कहै छै
मुदा पोसै छै ने सभ कोइ
जे पोसै छै गाए
हुनके हक छै कहत माए
बिनु श्रम कर्म नै होइ छै
ने श्रम कर्मक फल मिलै छै
सुनल-सुनाएल सभ कहै छै
जिनगीमे गाएक गुण नै जनै छै
मरलामे वेतरनी पार करै छै
गोदानक चर्च पुराणोमे कएल छै
गाए पोसब तखनि सुख भेटत
जिबैतमे दूध-भात भेटत।
नै पोसब गाए तँ
मरलापर दूध-भात केना भेटत
सभ लोकनि सोचैत रहै छै
बिनु धरती महल बनबै छै
गाएकँ माए सभ नै बुझै छै
मुदा माएकँ माए सभ कहै छै
गाए नै पोसै छै सभ कोइ।
जिनगीक जीवन पथमे
गाएक गुण नै जनै छै
मुदा मरलापर गाए संगे
वेतरनी पार स्वर्ग पहुँचै छै
जिबैतमे गाए-माएकँ
दूध सभ पीऐ छै

नरकसँ सोझे स्वर्ग पहुँचै छै
गाएक जरूरी सभ नै बुझै छै
दूधक लेल मारा-मारी करै छै
मरलापर गोदान करै छै।
❍

खेतिहरक जिनगी

भुरुकवा ऊगल
सूतल पड़ल छेलौं
मोन कछमछाइत छल
उठि मोन मारि कहुना
बाल-बच्चा मिलि
खेतपर गेलौं
काज करैत घाम बहए
भूखसँ टौआइत छेलौं
खेतक आड़ि बैस मिलि
सूखल रोटी-नून-तेल
चटनी मिरचाइ खेलौं
पानि पीब काजमे भीरलौं
खेतक काज करैत
देहक हड्‌डी-पसरी धसि
सूखि कारी बनि गेल
भरि पेट खेनाइ नै भेल
कतेको पीढ़ि बीति गेल
नीक वस्त्र नीक घर
कहियो नसीव नै भेल
कहियो रौदी कहियो बाढ़ि भेल
उपजा जरि-भसिया गेल
खाद-पानि महग भेल
खेतक उपजा जन-मजदूरीमे चलि गेल
साल भरि बाल-बच्चा
की खाएत केना जीअत

माथपर हाथ धरि
शोक-सागरमे डूमि गेल
बाप-दादा अही सोगमे
कर्जा लादि मरि गेल
दुख दबाइ बेटी बिआहमे
किताक-किताक खेत बीकि गेल
माथपर चोट मारैत बाजल-
खेत की देहक लहू बीकि गेल
जीब कऽ की करब
केकरा मुँह देखाएब
के शरण-भरण करत
आत्मदाह करनाइ नीक रहत
खेत उपजा कऽ की करब
नै अन्नक दाम नै जिनगीमे अराम
बजारक समानक दाम
पहुँचि गेल असमान
केना बँचत खेतिहरक पराण।
❍

ज्ञानक दीप

अन्हरिया राति
इजोतक नै कोनो उपए
सोचै छेलौं केना भागत
ई अन्हरिया राति
सोचैत मोनमे फुराएल
एक उपए अछि बँचल
दीप जरेलौं तखनि
किछु अन्हार भागल-पड़ाएल
मुदा सोचलौं ई अन्हरिया
बेर-बेर होइत रहत
कहियो इजोरिया तँ
कहियो अन्हरिया
ऐ दीपसँ
केना हएत मनुक्खक प्रकाश
मनुखकेँ अछि
ज्ञान-रूपी प्रकाशक अभाव
जखनि मनुख बनत ज्ञानी
तँ अभिमानी अन्हार दूर भागत
दीपक अन्हार भगौलासँ
नै काज चलत दुनियाँकेँ
ज्ञानरूपी प्रकाश अछि जरूरी
जइसँ दुनियाँ जग-मग हएत
ज्ञानक दीप जरौलासँ
कहियो अन्हरिया नै हएत।
❍

दुखाएल गंगा

सभ साधु गंगा नहाइ छै
कतेक पाप जिनगीमे केने छै
जखनि गंगा
पापीक पाप धोइ छै
सभक तन-मन शुद्ध करै छै
तँ अपने गंगा किए घिनाएल रहै छै
गंगा साधुकेँ शुद्ध करै छै
की साधु गंगाकेँ शुद्ध करै छै
की पापी पापकेँ गंगामे धोइ छै
तँ गंगा एतेक पाप केतए रखै छै
स्वर्गक गंगा धरतीपर बहै छै
पापीक पाप धोइत गंगा
पापक मोटरी केतए रखै छै
गंगा पापीकेँ
तन-कंचन मोन निर्मल करै छै
सभक कल्याण उपकार करै छै
उल्टे सभ गंगाकेँ दुख दइ छै
किए गंगा एतेक दुख सहै छै
नै कोइ गंगाक हीत सोचै छै
जिबैत गंगा मरैत गंगा
पाप उघैत बदनाम होइ छै
पाप नै पापी देखि गंगा
धरती छोड़ि पड़ाएल फिड़ै छै
स्वर्गसँ धरतीपर आबि गंगा
दुबकि दिन-राति पचताइत रहै छै
कतेक पापी धरतीपर बसै छै

असगरे गंगा पाप धोइ छै
पापीक पापसँ
दबि-दबि गंगा मरि रहल छै
गंगाक दुख कोइ नै बूझै छै
अपने दुखसँ दुखाएल गंगा
सागरमे डूमि-डूमि मरै छै।
❍

बेंगक बरियाती

असाढ़क मास
उम्मस भड़ल दिन
अमरस खाए-पीब
खोपड़ीमे सूतल
पसिनासँ देह भिजल
निन्न टूटि गेल
भंडार कोणसँ
ढनढनाइत मेघ
बिजुरी चमकैत
घनघोर बरसैत
जरल धरतीकेँ
प्यास मुझबए लगल
अद्रा नक्षत्रमे
खन्ता डबरा-पोखरि
झम-झम बरखासँ
भड़ए लगल
भड़ल पानिमे
बेंगक बरियाती
सजए लगल
उछलि-कूदि
ढौसा चितकबरा
पिअरका-मलिछाहा
सुरुकुनियाँ काटि-काटि
बरियातिक भीड़
जुटए लगल
घोघ फलकाबैत

एक्के स्वरमे
टर्टराइत ढोढियाइत
हजारक-हजार
अनघौल करैत
किछु गीत गाबए
किछु पानिमे डूमि
नकसक-नकसक करए
किछु एक-दोसरापर सबार भऽ
ऐपार-सँ-ओइपार करैत
सबल-निर्वलकेँ
सभ मिलि सहयोग करए
बेंगक जातिमे
कोनो भेदि नै
अपन संगठनकेँ
मजगूत बनौने
एकताक परिचए दैत रहल
बरखाक बुन्न
पड़ैत रहल
शीतल हवा बहति रहल
बेंगक बरियाती
सजैत रहल।
❍

बलानक बाढ़ि

बलानक बाढ़ि
ढल-पर-ढल बजरैत
सनसनाइत उधियाइत
पसरि गेल बाढ़िक पानि
हिम्मत हारि लोक
करए लगल गुहारि
बलानकेँ नै आएल
कोनो दया-माया
गौरवसँ कहलक
चारि मास तक
रहत हमर राज
नै चलए देब हम
अहाँ सबहक राज-काज
जखनि हमर
बाढ़िक भूत सबार रहत
ऐपारक लोक अही पार रहत
ओइपारक लोक ओहीपार रहत
जे हमरा बीच आएत
ओ हमरे पेटमे समाएत
कोस भरिक पेट हमर
केना भरत
कलम-गाछी चास-बास
खाए कऽ लेब साँस
पोखरि-खत्ता डबरा
बालुसँ भरि बनाएब हम भीठ
कहबी छै जे आएल बलान तँ

बान्हलक दलान
गेल बलान तँ उजरल दलान
कहबी साँच-छूठ सेहो होइ छै
मुदा बलान जिनगीकेँ
तहस-नहस कऽ दइ छै
उपजाऊ खेतकेँ
बालुसँ भरि भीन्डा बना दइ छै
अन्नक बदला बलान
बालु फँकबै छै
बलानक बाढ़ि
ठहुनिए पानिमे
गरगोटिया दइ छै
विकास नै हुअए दइ छै
विनाश करै छै
गाम-घरकेँ उजाड़ि
जिनगी तबाह करै छै
बलानक बाढ़ि।
❍

पानिक बून्न

बून्न-बून्न पानिक
खगता सभकेँ पड़ै छै
बून्न-बून्नसँ घैला भरै छै
पोखरि-इनार भरि
झील-झरना-नदी भरै छै
धारा मिलि समुद्र भरै छै
सबहक पिआस मेटाइ छै
दुनियाँ जीबै छै
सुखाएल धरतीकेँ सिंचै छै
सभ मिलि पानिक उपयोग करै छै
दुरूपयोग सेहो होइ छै
ओ दिन दूर नै छै
पानिक बून्न लेल
तरसि-तरसि मरतै
धरती धधकि जीव मरतै
दुनियाँकेँ बँचबैले
बूने-बून पानिक रक्षा करए पड़त
नै तँ जिनगी क्षणो भरि नै चलत।
❍

हराएल भगवान

मोन घबराएल छल
चैन छिनाएल सन
कच्छ-मछ करैत
मोनमे फुराएल
सुख-शांति लेल
भगवानसँ मिलब
अपन दुखरा सुनाएब
जे सुख-शांति लेल
कोनो उपए बताएत
जइसँ कल्याण हएत
मंदिरे-मंदिर घूमि-घूमि
पूजा-विनती बहुत केलौं
मसजिद-गुरुद्वारामे
माथा टेकिलौं
गिरजाघरमे प्रार्थना केलौं
मुदा हराएल भगवान
कतौं नै भेटल
मोनक अशांति नै मेटल
मोनमे विचारि
गहबरे-गहबर मंसा केलौं
साधु-संतक सेवा करैत
वन-जंगल घूमि-घूमि
तीर्थाटनक यात्रा केलौं
तन-मनक शुद्धि लेल
गंगामे नहेलौं

देहक मलि जरूर छुटि गेल
मुदा मोनक मलि नै गेल
बैचैनी बढ़ि गेल
तखनि ज्ञान भेल
सबहक दिलमे
भगवान बसैए
कण-कणमे रमैए
अपन मोन-मंदिरमे झाँकि तकलौं
हराएल भगवानकेँ देखलौं
सुख-शांतिक वरदान पेलौं।
❍

जीबैले

जीबैले
दुखक नोर
पीबए पड़ै छै
बिनु अरमान
जीबए पड़ै छै
दुखक भार
जिनगी भरि
सहए पड़ै छै
जिनगी मिलै छै
दुखक सहए लेल
बिनु दुख
सुख नै मिलै छै
किछु करबाक लेल
जिनगी जीबए पड़ै छै
जीबैले
दुखक नोर
पीबि कऽ जीबए पड़ै छै
संसार सुन्दर नै
दुखक सागर छै
अमर नै नाश्वर छै
काँट भरल बाट
मोड़े-मोड़पर
त्रिशुल गाड़ल छै
कर्मसँ काँट
फूल बनै छै

सभ दुख
सुख बनि जाइ छै
दुख सहि-सहि
जहिना किचरमे
कमल फुलै छै
जीबैले
किछु करए पड़ै छै
बिनु कर्म
जीवन सफल नै होइ छै
जीबैले
दुखक नोर पीबि-पीबि कऽ
जीबए पड़ै छै।
❍

चैताबर गीत

लाले रंग चुनरी
रंगेबै हो रामा
चैतक महिनमा ना
गोरे-गोर हाथमे
मेंहदी लगेबै
सजनाकँ तड़सेबै ना
हो रामा चैतक महिनमा ना
लाल रंग फूलसँ
सजिया सजेबै
मीठ-मीठ बात सजनासँ कहबै
हो रमा चैतक महिनमा ना
आमक बगियामे
बैसल कोयलिया
पियाकँ बजबै ना
हमरा तड़साबै ना
हो रामा चैतक महिनमा ना
चमेली फुलबासँ गजरा बनेबै
कारी-कारी केसियाकँ सजेबै
पियाकँ ललचेबै ना
हो राम चैतक महिनमा ना।
❍

चैती गीत

भोर भेलै हे सखी
भिनसरबा भेले हे
कनी चलू ने बगिया
कोयलिया बजै हे
हे सखी चैतक महिना हे
आमक गाछीमे
झुलुआ झुलबै
पिया केर संगे हे
हे सखी चैतक महिना हे
कारी-कारी केसिया
डाँरपर लटकै
पूर्वा-पछियामे फुलकै
मीठ-मीठ गीत पियाकेँ सुनेबै हे
हे सखी चैतक महिना हे
पिअर साड़ी लाल चोली
लाले चुनरिया हे
चढ़ल यौवन मसकै चोली
रहि-रहि बिहुँसै हे
हे सखी चैतक महिना हे।
❍

प्रेमक भूखल

हे उधो कियो हरत दुख मोर
पएर पकड़ि हम अहाँकेँ कहै छी
दुखक नै कोनो ओर
दिलक दुख हम केना केकरो कहबै
श्याम बनल चित्तचोर
हे उधो कियो हरत दुख मोर।

चढ़ल यौवन उमरल सन दरिया
प्रेम वीरहसँ मन भेल मजबूर
थर-थर काँपए देह हमर
कलेजा भेल कमजोर
भरल यमुना लेलक कोर
आँखियासँ बहए हमरा नोर
हे उधो कियो हरत दुख मोर।

डगर बहारि हम अङना निपलौं
मुरि-मुरि देखैत चहु ओर
सोलह श्रृंगार सजि बाट जोहै छी
वंशी धून सुनि हम भेलौं विभोर
कहिया भेटत श्याम चित्तचोर
हे उधो कियो हरत दुख मोर
सभ गोपियन प्रेमक भूखल
कन्हैया किए अछि रूसल
प्रेम वीरहमे हम छी सूतल
सात जनम तक आस करब हम

कन्हैयासँ दिलक बात कहब हम
हे उधो कियो हरत दुख मोर।

कोन कसूर भेल हमरासँ
जल्दीसँ कहियौ कन्हैयासँ
विनती सुनियौ दुखक मोर
कन्हैया हरत दुख मोर
कहिया मिलत श्याम चित्तचोर
हे उधो कियो हरत दुख मोर।
❍

मरूआक मान

अन्नमे मरूआ बड़ अनमोल
रूपसँ कारी बड़ गुणकारी
उपजे ऊसर खेत मुदा हितकारी
राजा रंक खाइतो लजाइ
गरीबक बचाबै पराण
विपत्ती समैमे मरूआ
अतिथिओकेँ राखए मान
मरूआक रोटी तोरीक तेल
नोन मरिचाइ चटनीसँ मेल
नहि कोनो खर्चा खाइतो चर्चा
इचना, पोठी माछक चटनी
संगे जे खाइ मरूआ रोटी
नहि बनत रोगी मोटी
रक्तचाप, मधुमेह, जलोदर
भागल रहत देहसँ
कहियो नहि हएत कफ खांसी
मरूआ औषधि गुणक खान
आदिकालसँ रखने अछि मान
मरूआ होइत अछि टिकाउ
कोठीमे वर्षो तक रहए बन्द
सभ दिन होइत अछि बिकाउ
मरूआक खेती बड़ असान
अन्नमे मरूआक बड़ मान
सभ दिन राखए गरीबक मान।
❍

अरमान

दू पाटनक बीच
सभ पीसाइ समान
सभ अरमान-आंसू
संगे बहि गेल
तेजाबी बरखा संग
नुनगर पानिमे
विशाल समुद्रमे विलिन
जिनगीक गाड़ी डूबि गेल
सभ अरमान-आंसू
संगे बहि गेल
जन्मक उदेस
नै रहल कोनो ठेकान
रूकब केतए नै कोनो मकान
सोचै छलौ-
दुनियाँमे करब पैघ-पैघ काज
मानव-दानवक बीच
पिसाइत-पिसाइत भऽ गेलौं
बेकाम राख समान
दुख-सुख दू पाटनक बीच
जिनगी नित्य पिसाइत
भूलि गेलौं अपन उदेस
नै कए सकलौं
कोनो नाम निशान
जिनगीक गाड़ी रूकि गेल
दू पाटनक बीच
सभ अरमान आंसू

संगे बहि गेल।

❍

भारत माता

हमर भारत भूमि हमर माता छी
विशाल क्षेत्रमे अहाँ पसरल छी
ऋृषि-मुनिकेँ अपने हृदैमे बसौने छी
देवता आ मनुक्खक तीर्थ-स्थल बनलि छी
छोट-पैघ सभ जीवकेँ
अपने हृदैमे समौने छी
अन्न, जल, फल आदिसँ
हमरा सबहक जीवन पालै छी
अनेको खनिज सम्पतिकेँ
अहाँ हृदैमे छिपौने छी
अपन संतानकेँ धनवान बनौने छी
अनेको नदी-झील झरनासँ
सभ फसलकेँ सिंचै छी
प्रसाद रूपमे हमरा सभकेँ
अन्न-जल-फूल-फल दइ छी
वन-उपवन-वाग-बगिचाक शोभा
नित रँग-विरँग फूलसँ सजबै छी
अनेको तीर्थ-स्थलसँ पवित्र बनलि छी
सूर-वीर पुत्र-पुत्रीसँ
अहाँक गोद सभ दिन भरल अछि
साहित्य,दर्शन,विज्ञान,ज्योतिष क्षेत्रमे
अपन इतिहासक प्रकाश दुनियाँकेँ दइ छी
हम सभ अहाँक पुत्र-पुत्री
अहाँ हमर माता छी
सभ धर्म, सभ जातिक आदर अहाँ करै छी
अपन माटि-पानिसँ सबहक पालन करै छी

अपनोकेँ नै दुश्मनोकेँ शरण अहाँ दइ छी
अहाँक रक्छा हमसभ सदासँ करै छी
हम सभ देशवासी अपन माताकेँ
नित चरणपर सुमन अर्पित करै छी
हमर भारत भूमि हमर माता छी।
❍

परदेशी

किए परदेशी बनल छी अहाँ
किए कलंकित बनल छी अहाँ
अपन मिथिलाक महिमा अछि अपार
अइठाम मिलैत अछि सबहक रोजगार
आब नै रहत कोइ बेरोजगार
मिथिला राज्यमे अछि काम अपार
माटि-पानिसँ उपजे अन्नक भंडार
कियो नै भूखल सूतल रहत
सबहक बनत राटी-दालि
बाल-बच्चा मिलि विकसित राज्य बनाएब
राज्यक खुशहाली आ हरियाली बढ़ाएब
अपनो खाएब आ दोसरोकेँ खुआएब
अपने राज्यक माटि-पानि
सदासँ अछि अमृत समान
रखब दुनियाँक मान-सम्मान।
❍

मोनक बात की कहब

चलू बहिना चलू जहिना छी तहिना
की कहब हालचाल बीत गेल ओहिना
मंदिर, मेला कतेको घुमलौं जहिना तहिना
पूजा-पाठ बहुतो केलौं पीया आएत कहिया
फूल, बेलपत्ता, चंदन-अछत, धूप-दीप
सभ देवताकेँ चढ़ेलौं तीन पेखन
आब की करब समझि नै पबै छी अखनि
जादू-टोना सेहो केलौं चारू केना
चलू बहिना चलू जहिना...

चढ़ल उमरिया हम केना बिताएब
जिनगीक भार पहाड़ बनल अछि
पहाड़क भारसँ यौवन भार
अधिक बनल अछि
देव-धरमकेँ दया नै अबैत अछि
चंचल मन दिल धधकैत अछि
सभ किछु रहितौं दिन-राति सुना बितैत अछि
पिया बिनु जिनगी सुना-सुना लगैत अछि
मनक बात की कहब...।
❍

धनरोपनी

सौनक राति
इजोरिया जरैत
पूरबा हवा दोमैत
आसन लगौने बैस
अकास निहारैत
सोचैत छेलौं
आश लगेने
सौनक बून्न
कहिया खसत
जे भरिखरि
धनरोपनी हएत
किछु दुर नभमे
बिजली चमकैत
ढनमनाइत दस्तक दैत
बादल उमरि गेल
धरतीपर बेंगक
बाजा निरंतर बजैत
झिंगुरक झनकारसँ
धरती धमकाबैत
मेघक बरियाती
सजए लगल
कारी काजर सन
मेघ उमरि पड़ल
बिजली छिटकि छिटकि
मेघक रस्ता देखबैत
पसरि गेल चारूकात

घनघोर बर्खा भेल
डबरा-खत्ता भरि गेल
खेत चानी सन चमैक गेल
खेतक पानिसँ
धूर तड़पैत उछलैत
इचना-पोठी-टेंगरा
चाल दैत कुदकैत देखि
गामक बच्चा बेदरू
कूदि-कूदि माछ पकड़ैत
बिहानेसँ गजार कदबा
हुअ लगल खेत
हर जोतैत हरबाह
बिरहा गाबैत
गामक माए-बहिन
धानक बीआ उपारैत
भूलल बिसरल
सोहर समदाउन गबैत
धनरोपनी करैत खेत
हर्षित मनसँ कहैत-
"हरक नाश आ
खेतक चासपर
पेट भरबाक अछि
सभकेँ आश।"
❍

लफंगा

फाटल धोती फाटल अंगा
पएरक जूता टुटल फाटल
आँखिक चश्मा दूरंगा
चौंकैत चलैत अछि बेढ़ंगा
बात करैत जना लफंगा
लफड़ैत चलि जाए दरिभंगा
बात-बातमे फँसाबए दंगा
सवाल-जवाब करैत अरंगा
जखैन भऽ जाइत दंगा
मौका पाबि फनैत नंगा
बात-बातमे कहैत लफंगा
मन चंगा तँ कठौतीमे गंगा
साँच झूठक दोहरी अंगा
एकरंगा पहिर बनाबै फंदा
झूठक खेतीमे उपजाबए बूटी
फाटल जेबीमे रखलक मोती
राम-नाम रटलासँ नै मिलत रोटी
नीक काज कऽ बनाएब कसौटी
जखनि किनब मोट-मोट पोथी
ज्ञानक प्रकाश मिलत अनोखी
विकासक गंगा बहत चौमुखी।
❍

बेरोजगारी

हम छी बेरोगार
काम करै छी लाचार
हमरासँ करबैत अछि बेगार
भुखल पेट बनल छी दुखारी
दुखक मारल सूतल छी
ऊपरसँ परिवारक बोझ भारी
जहिना लकड़ीकँ चीरैत आरी
खेबाक नै भेटैत उधारी
बाल-बच्चा बनल अछि भिखाड़ी
हमरा देखि लोक मारैए किलकारी
की करब नै अछि समझदारी
आसा नै कहिया बनब रोजगारी
की पराण लेत अत्याचारी
देशमे कहिया मेटाएत बेरोजगारी
सरकारकँ नै अछि सभसँ सरोकार
हम छी बेरोजगार।

❍

रूपैआक ढेरी

रूपैआक ढेरीपर करैए खेल
दुनियाँकेँ नचबैए ठेल-ठेल
रूपआक लालचमे बनल अछि पागल
दानव बनि मानवपर करैत राज
सुखक भूख मिटबैए रूपैआसँ
दीन दुखियाक तौलैए रूपैआसँ
मनुक्खक चालि छोड़ि चलैए
नाच करैए खंजन चिड़ै सन
सुखक चाहमे भटकि गेल राह
सोमरसमे समाए गेल मन विचार
नंगा नाच करैए रूपैआ ढेरीपर
जोशमे होश उड़ि गेल नचबैआकेँ
जखनि रूपैआक ढेरी अंत भऽ गेल
जिनगीक दू किनारा बीच पिसाए गेल
दुखक धारमे बहि गेल रूपैआक ढेरी
जहिना मनुख मुट्ठी बन्न जनमैए
हाथ पसारि संसारसँ चलि जाइए
रूपैआक ढेरी ओहिना रहि जाइए।
❍

भ्रष्टाचारी

जागु-जागु यौ देशक भैयारी
देशमे घुसल पैघ-पैघ चोर
चोर केहेन पहिचान नै आबए
देशमे घुसि सभकेँ सतौनेए
देशक भैयारी, जागु, करू तैयारी
देशक करू रखबारी
आब आपसमे करू नै कोनो बेपारी।

चोर देशकेँ करैत अछि कमजोर
चोरक नाओं छी भ्रष्टाचारी
सभ विभागमे जमैने अछि अधिकार
मंत्री-संत्री एकरे बलपर
भेल अछि मालो-माल।

बड़का महलबलाक दिल अछि कारी
सभ भ्रष्टाचारी, बनल अछि अधिकारी
देशक धन विदेशमे करैत अछि बिकवाली
सभ भ्रष्टाचारी, बनल अछि अत्याचारी
जनताक सोनित
बेचबाक करैत अछि रोज तैयारी
केना भागत देशसँ ई भ्रष्टाचारी
तेकर करू तैयारी
जागू-जागू यौ देशक भैयारी।
❍

आएल वसन्त

आएल वसन्त
भागल जाड़
फूलसँ सजल धरती
दुलहिन समान
फूलक सुगन्ध चढ़ए आसमान
आम मजरल
महुआ पसरल
भौँरा करए गुणगान
सेरसौं बाजए
शहनाइ समान
वसन्ती रंगमे
रंगाएल सभ एक समान
ढोल, मजीरा, ढाक, डफली
बजबैत गबैत फागुनक गान
रंग अबीरमे नहाएल समान
भेद-भाव मिट गेल
सभ लगैए एक्के समान
आमक गाछपर कोइली बजैत
सभकेँ दैत प्रेमक वरदान
धरती बनल स्वर्ग समान
आएल वसंत भागल जाड़।
❍

अप्पन-पराया

अपना लेल सभ मरै छै
पराया लेल नै कोइ
जे परायाकेँ अप्पन बूझै छै
तँ जग सुन्दर होइ
अप्पन तँ अप्पन होइ छै
पराया किए होइ छै
सभ धरतीपर जनम लइ छै
एक्केठाम जीबै-मरै छै
जाति भेदक अंतर किए होइ छै
अपन करम अपने करै छै
दोसरकेँ अहित किए होइ छै
जखनि मनुक्खक जाति एक्के होइ छै
सभ तँ अन्ने-पानि खाए-पीब जिबै छै
तखनि विचारमे किए अन्तर होइ छै
सबहक विचार जँ एक्के हेतै
सभ-आनो-विरानो अप्पन हेतै
एक्करंगा समाज बनतै
सबहक विकास समरूप हेतै
अप्पन-परायक भेद मेटेतै
जग सुन्दर बनि जेतै।
❍

बाट बटोही

डेग-डेगपर बाटमे मोड़ होइ छै
तैयो राही बाट चलै छै
तहिना जिनगीमे मोड़ होइ छै
बाटक मोड़ करोट नै लइ छै
मुदा जिनगीक मोड़ करोट लइ छै
बाटपर बटोही सभ दिन चलै छै
जिनगीक मोड़ कठिन होइ छै
बाटक बटोही बदलैत रहै छै
तहिना जिनगियो बदलै छै
जहिना बाटक दिशा होइ छै
ओहिना जिनगीक दिशा सेहो होइ छै
सही बाट पकड़ि बटोही
अप्पन-मंजिल पहुँचै छै
गलत बाट पकड़ि बटोही
भटकि-भटकि चलि थकै छै
बाटक ओर-छोड़ नै होइ छै
बटोही चलैत थकि मरै छै
मुदा सही बाट चलैत बटोही
अप्पन जिनगीक लक्ष्य पबै छै।
❍

हाटक चाउर बाटक पानि

हाटक चाउर बाटक पानि
बनियाँ घरक तरजूकेँ
नै होइ छै कोनो माइन
जानि-मानि होइ छै हानि
जिनगी चलै छै उबानि
उजरल वनमे फूल-फड़
खिलैत-फड़ैत केना
ठेलि-ठेलि जिनगी चलैत केना
फाटल वस्त्र टुटल घरमे
जिनगी रहै छै अन्हारे-अन्हार
सूखल जिनगी केना पोनगत
पोनगि-पोनगि सुखि-सुखि जाए
केना सिंचब नै फुराए
सभ दिन जिनगी अन्हरिए बिताए
इजोरिया कहियो नै देखाए
सुक्खल तन उजरल मन
वन-वन भटकै मृग समान
हाटक चाउर बाटे बिलाएल
घाटक पानि घाटे सुखाएल
बिनु पानि नै पियास बुझाए।
❍

ज्ञान बाँटैत चलू

लिखैत पढ़ैत रहू
जिनगीकेँ सजबैत रहू
लिखल पढ़ि ज्ञानी बनू
लिखि-लिखि ज्ञान बाँटैत चलू
अपन ज्ञान अपने नै
दुनियाँमे बॉटैत चलू
लिखैत-पढ़ैत रहू
ज्ञानक गीरह नै बान्हू
खोलि-सजाय बॉटैत रहू
ज्ञानीक ज्ञानसँ दुनियाँ सजै छै
आज्ञानी विनाश करै छै
लोभ-मोह-माया-छोड़ि
दुनियाँकेँ सजबैत चलू
ज्ञान बॉटलासँ खर्च नै होइ छै
निरंत्तर ज्ञान बढ़ैत रहै छै
ज्ञानसँ अभिमान मेटाइ छै
मान-सम्मान सभ दिन भेटै छै
ज्ञानक काज राजा-रंककेँ पड़ै छै
बिनु ज्ञान दुनियाँ नै चलै छै
ज्ञान बॉटैत चलू...।
❍

प्रेम आकि पैसा

अहाँकेँ की चाही?
प्रेम आकि पैसा-
प्रेम- प्रेमसँ सुख-शांति भेटत
दुख हरत कल्याण करत
बिगरल काज असान करत
दिलक दरद असान करत
एकताक पहिचान बनत
यश बढ़त इज्जत भेटत
विश्वक कल्याण करत।
पैसा-
पेंच फँसाएत
प्रेमसँ दूर राखत
दुखक पोटरी सिरपर लादत
ऊँच-नीचक भेद बढ़ाएत
धर्म-इमान मेटाएत
अपने बलसँ गरीबपर
अत्याचार बढ़ाएत धाक जमाएत
जोश बढ़ाएत नीन उड़ाएत
दुनियाँमे अशांति बढ़ाएत
अहाँकेँ की चाही।
❍

कालक पहरा

कालक पहरा चहुओर पड़ैए
चंचल चित्त मन चोर बनल अछि
किला बीच दुआरिपर पहरा पड़ैए
नगर शहरमे ढिढोरा पड़ैए
राजा बैसल सिंगहासन डोलैए
प्रजा सूतल नीन खिंचैए
तही बीच चोर चोरी करैए
कालक पहरा चहुओर पड़ैए।

आन्हर राजा सेवक बहिर
भूखल प्रजा होइ छै अधीर
मंत्री-संत्री चोर बनल अछि
अधिकारी खजाना लूटैए
आन्हर राजा भुजा फँकैए
मंत्री मलाइ चटैए
भरल खजाना लूटि-लूटि
नीत होली-दिवाली मनबैए
देखि प्रजा भूखल सूतैए
कालक पहरा चहुओर पड़ैए।
खजानाक माल विदेस भेजैए
रक्षक भक्षक बनल अछि
निर्वल राजा चोर सबल अछि
जनताक लहु चौबटियापर बिकैए
सिंगहासनसँ सटल राजा
लोभ-मोह-माया बीच फँसि
टुकुर-टुकुर तकैए

खाली खजाना देखि राजा
सोगमे सोगाएल रहैए
कालक पहरा चहुओर पड़ैए।
❍

पियासल मन

झुलसल तन करियाएल सन
पियासल मन मन्हुआएल सन
सूखल वन उजरल उपवन
तपि-तपि धरती जरल सन
बिनु मेघ तड़सए नयन
करेजा कापए भुमकम सन
कि हएत बर्खा हर्षित मन
नै कोइ जानए ज्योत्षी सन
मन उदास देखि डोलए पवन
मेघकेँ बजबए सिहकि पवन
वातावरण भेल मेघौन
झरझर बरसए बजए ढनढन
सूखल धरती मुरझाएल वन
उपवन भेल हरिअर कंचन
झुमि-झुमि नाचए मेघ संग पवन
बिजुरी चमकए डरै तन-मन
पाखि खोलि नाचए मोर-मोरनी संग
सबहक तन-मन जुराएल
पियासल मन धरतीकेँ बुझाएल।
❍

दहेजक खेल

दहेज-
बिआह बिगाड़त इज्जति उताड़त
तैयो लोक करैत अछि
दहेजसँ मेल
जखनि दहेजक खेल शुरू भेल
बिआह भेल गरमेल
समाजमे भेल बड़-बड़ खेल
बिआह सन पवित्र बंधनकेँ
बिगाड़ैत दानव दहेजक खेल
बिआहक शुभ मुहुर्तमे
दहेज दिअए अरचन-धोखा
बिगाड़ैत समाजक नाता
परिवार आ समाजक
तोड़ि देत दिलक नाता
आउ हम सभ मिलि
दहेज मुक्त समाजक निर्माण करू
भेद-भाव मेटा कऽ
बिआहक वंधन मजगूत करू।
❍

घर परदेश

कतेक दिन बाद एलौं
हाल-चाल दुखद सुनेलौं
राति-दिन दुख किए सहलौं
घरेमे रहितौं धीरज देतौं
सभ मिलि दुख सहितौं
अधो रोटी खाए कऽ जीबितौं
धिया-पुता संगे रहितौं
अपने समाजमे कमेतौं
परदेश पराया होइ छै
दुख-सुख कियो नै बॉटै छै
रूपैआ लेल दुष्कर्म करै छै
नै रूपैआ भूखै मरै छै
मुदा अपन समाजमे प्रेम होइ छै
पैंच उधार सेहो भेटै छै
अपन कि आनोकेँ
विपत्तिमे मदति करै छै
सभ इज्जतसँ जीबै छै
घर छोड़ि परदेश किए गमेलौं
बाल-बच्चाकेँ बिलटेलौं
रिनियाँ महाजन सेहो भेल
कर-कुटुमैती सभ छूटि गेल
एहेन करम किए करब
जे परदेशमे खटब
काज नै देत मरितो परदेश
आब एहेन काज नै करब
जीबैले समाज सभसँ पैघ

समाजेमे रहि जीअब मरब।

❍

गहुमक कटनी-दौनी

अधरतिएमे नीन टुटल
कच्छमछाइ सूतल पड़ल
गहुमक कटनी माथपर चढ़ल
काटि-खोंटि घर नै लाएब
तँ भरि साल बाल-बच्चा
की खाएत केना जीअत
अही सोचमे पड़ल छेलौं
एकाएक मनमे फुराएल
सभ धिया-पुताकेँ उठेलौं
आँखि मिड़ैत हँसुआ लेलौं
सभ मिलि खेत पहुँचलौं
गहुमक खेतक नम्हर कित्ता
सभ मिलि काटैत छेलौं
अधकटनी भेल मुदा
चैतक रौद मुँहपर पड़ल
आब कि काटब गहुम
रौदामे झुलसि गेलौं
खाली गहुमे काटब से केना
भूख-पियाससँ बहए पसिना
मुदा हिम्मति हारि जाएब केना
सभ गहुम काटि खेत खसेलौं
चैतक रौदमे देह झरकेलौं
घूमि घर एलौं सुसतेलौं
भानस-भात भेल नहेलौं
सभ मिलि खेलौं आराम केलौं
पानि पीब जुन्ना बनेलौं

धिया-पुता संग खेत गेलौं
गहुमक बोझ बान्हि-बान्हि
उघि-उघि थ्रेसर लग पहुँचेलौं
राति भरि दौनी करेलौं
गहुमक दाना कोठीमे भरलौं
भूसीकेँ भुसकाँरमे टलियेलौं
चारि मासक गहुमक फसलि
दिन-राति खटि कऽ घर केलौं
साल-भरि रोटियो खाए जीअब
तइ चिन्तासँ दूर भेलौं।

❍

बिआह की छी?

बिआह की छी
दू आत्माक मिलन
कि दू रक्त मेल
कि दू देहक संगम
कि दू वंशक गठवंधन
कि स्त्री-पुरुषक प्रेम वंधन
कि मनुख जातिक क्रमश:
सृजनात्मक सफल प्रयास
की बिआह समाजक रीति-रिवाज छी
बिआह की छी?
❍

आजुक दिन

समाजक बदलल स्वरूप
ने ओ गाम ने ओ नगर
ने पहिलुका ठाठ-बाठ
ओ पुरना विरासतमे भेटल
धरोहर भेल विलिन
खण्ड-पखण्ड भऽ टूटि गेल
बाबा समैक गाम-समाज
पोखरि इनार परती-पराँत
सभ किछु बदलि गेल
नै अछि कोइ देखिबैया
समाजक प्रेम टूटि गेल
बड़का दलान बड़का परिवार
टूटि कऽ चकनाचूर भऽ गेल
कतेको पड़ाइन भेल
तँ कतेको विकासक होड़मे
गाम-घर छोड़ि चलि गेल
समाजक मर्यादा पानिमे बहि गेल
आजुक दिन नै रहल
भाय-भैयारीमे प्रेम
सभ अपन रागक डफली
अपन-अपन बजबैए
बदलल समाजक स्वरूपमे
अपन जिनगी बितबैए
खान-पान बदलि गेल
पालकी-महफा ओहार लगल

कठही गाड़ी विलिन भऽ गेल
डफरा-बसुली कठघोड़ाक नाच
आइ समाजसँ उसरि गेल
गामक पंचैती गामेमे
बड़का दलान बैस करै छल
बड़का-छोटका सभ मिलि
दूघ-पानि बेड़बै छल
बाघ-बकरीकेँ एकठाम
एकहि घाट नमबै छल
आजुक दिन ओ रीति-रेबाज
गामसँ उसरि गेल
बदलल लोक बदलल समाज
हित कम अहित बेसी भेल
आजुक दिन देखै छी।
❍

पुत्र कुपुत्र

आशीर्वाद हम दइ छेलौं
अहाँ नै उचित समझि सकलौं
माए-बापक अरमानकेँ
अहाँ पुरा नै कऽ सकलौं
पुत्र नै कुपुत्र छी अहाँ
खनदानक मर्यादा नै बचा सकलौं
माए-बापक रीनकेँ अहाँ
जिनगीमे नै सठा सकलौं
स्वर्ग सन सृजल घरकेँ अहाँ
लंका जकाँ जरा देलौं
भरत सन भक्त भाएकेँ
अहाँ अपन प्यार नै दऽ सकलौं
देशभक्त छी अहाँ
मुदा अपन घरकेँ जराकेँ जरा देलौं
जरल घर ऊजरल परिवार
समाजोकेँ अहाँ ठोकरा देलौं
आबए बला समैमे अहाँ
केकरा की जवाब देबै
मुँह छुपा अन्हारेमे अहाँ
आँखिक नोर बहेबै
मनुख की मनुखताकेँ छोड़ि
क्षनिक धन-सुख लेल
अमुल्य जिनगी गमा देलौं
असल जिनगी स्वर्ग छोड़ि
नरकक जिनगी अपनाए लेलौं

आशा बहुत छल अहाँसँ
सभकेँ निरास बना देलौं
की उदेस अछि अहाँक
हम सभ नै जानि सकलौं
की लऽ कऽ एलौं अहाँ
की लऽ कऽ जएब
सभ अरमानकेँ अहाँ
क्षनेमे जराए मेटाए देलौं
अहाँपर बहुत गर्व छल
सभकेँ माटिमे मिला देलौं
पुत्र नै कुपुत्रक नाओंसँ
दुनियाँमे जानल जाएब अहाँ
धन पत्नी मित्र बहुत भेटत
माए-बाप सहोदर भाए
जिनगीमे एक्केबेर भेटत
टुटल दिल कहियो नै जूटत
कुपुत्रक कलंक नै छुटत
सभ किछु रहितो जिनगीमे
आशीर्वाद नै भेटत।
❍

कतेक दुख काटब हरि हे

हरि हे, दुखक ने कोनो ओर
दुखक धार बहए चहुओर
चंचल मन चतुराइ करए
बीच भंवरमे घुरिआइत रहए
थाकल तन-मन उबिआइत रहए
जनमसँ मरण धरि छी अनाथ
कतेक दुख काटब हरि हे।

अहाँ बिनु हम केना जीअब
जनमक बंधन केना तोड़ब
थाकल पॉव चलब केना
दुख सहैत भेलौं मजबूर
दुखक आस निरास भेल
हरि हे हम छी अनाथ
कतेक दुख काटब हरि हे।

काठक नाव दुखिया सबार
चहुओर बहए बयार
बीच धार भौर खेलाइत
उधिआएल धारमे डुमै सबार
थाकल तन हारल मन
अहाँक शरणमे छी आएल पड़ाएल
कतेक दुख काटब हरि हे।

सत्यक नाव धर्मक पतबारि

हरि खेबैया पार लगाबए
अपने मन मंदिरमे बसाबए
जन्मक दुखसँ मुक्ति पाबए
आत्माक रहस्य जानि
भवसागरकँ हरि पार लगाबए
कतेक दुख काटब हरि हे।
❍

बारहो मास

अगहनक आगमनसँ सभ सुख पाबए
पूसक सर्द हवा दुख बढ़ाबए
ओस कुहेससँ जाड़ बढ़ाबए
माघक जाड़ हाड़ हिलाबए
फागुन मास सभ फगुआ गाबए
रंग-अबीर गुलाल उड़ाबए
बाजए कोइली कू-कू
मोर-पपीहा पी-पी
वसन्ती हवासँ सभ हर्ष मनाबए
आम-लीची बौरसँ बौड़ाएल
फूलक महकसँ हवा पगलाएल
चैत मास चना-जअ गहुम पकए
महुआक फूल सभ दिस गमकए
बैसाखक रौद धरती तपाबए
कुम्हार माटिक बासन पकाबए
जेठमे खेतीहर खेत जोताबए
धानक बीआ खेत खसाबए
बनियाँ-बेकाल अन्नक भंडार बढ़ाबए
असाढ़मे आम-जामुन खाबए
पाकल आमसँ हाट सजाबए
खेताक धूर मजगुत बनाबए
सौन-भादो किसान करए खेत कादो
खेतमे लगाबए धानक चास
बाढ़ि-पानि दइ शोक-संताप
आसीन जगाबए पावनि-तिहारक आस

कातिक मास पेटक दुख सताबए
तेरहम मास कर्जा बढ़ाबए
अगहन आगमनसँ सभ सुख पाबए।
❍

सड़क बीच नाला

साँझक समए पूर्बा बहैत
डुमैत सुरुज चान मुस्काइ
घर-घरमे दीप जरैत
अकासमे तरेगन चमकैत
बाग-बगिचा मह-मह करैत
चिड़ै-चुनमुन्नीक चहक शान्त भऽ गेल
गामक चौबटियापर पसरल
हाट-बजार उसरि शान्त भेल
मुदा हमर कान्त
नै घर घुमि आएल
ओ एबो करत केना
बैसल अछि दारूखाना
दारू पीब बनल अछि मस्ताना
मस्तीमे कुश्ती केलक
हार-पाँजर तोड़ि बेकाम बनल
काज तँ बड़ घिनौना केलक
लड़खराइत निशाँमे चलैत
सड़कपर झुकैत-पड़ैत
नालामे धड़फराइत गिरल
निशाँमे बेहोश पड़ल छल
मुदा कहैत छल ई नाला
दिनमे रहैए सड़कक कात
रातिमे आबि जाइए
सड़कक बीचो-बीच
हमरा गिरबैए खिंच अपने दिस

मुदा हम तँ छी अपने नीच
जखनि हम होशमे एबै
नाला बनेबै सड़कक बीच।
❍

आँखि रहितो आन्हर

गहबर-गहबर गोसाँइ खेले
भगता-भगतिनियाँ ठगिनियाँ
देवी-देवताक ठिकेदार
असल धर्मराज बनल
पान-फूल अच्छत लड्डू
दीप-धूप अगरबत्ती भरल
रंग-बिरंगक डाली सजल
डाली लगबए गहबरमे भुतिनियाँ
झालि मृदंगक धाप संगे
झुमि-झुमि गाबए देवी गीत
गोसाँइ खेले भगता-भगतिनियाँ
छत्तीस देवी चौदहो देबान
अखनि छौ देहपर विरजमान
जे मांगब से पूरा करतौ
कारनीक सभ रोग वियाधि हरतौ
फूल-अच्छतसँ वरदान देतौ
बिगरल काज मनोकामना
चुट्की बजिते पूरा करतौ
बदलामे लड्डु-छागर-पाठी मांगतौ
बेङ जेना कूदि-कूदि घुमैत
बेंतक छड़ीकेँ हिलिते
आहूत जरैत देखिते
भूत-प्रेत सभ भागि जेतौ
अरहुल फूलसँ देवी बजाबए
बोल जय गंगाक पुकार लगाबए

भूत-प्रेत लगल कारनीकेँ
झोंटा पकड़ि झुलाबए-भगाबए
कोखिया गोहारि गहबरम करए
कबुलामे छागर-पाठी बलि मांगए
बिना देने नै देवी मान्तौ
कुल-खनदान बाल-बच्चाकेँ सतेतौ
गामक-गाम सुड़डाह करतौ
सभ डरि एकटंगा कल जोड़ि
देवीकेँ मनौलक-बुझौलक
मन भरि लड्डू अँचरी चढ़ौलक
छागर-पाठी बलि देलक
तंत्र-मंत्रसँ बान्हल जंतर
अपन-अपन कंठहार बनौलक
अखनो धरि समाजक लोक
अन्धविश्वासमे फँसि मरैए
हिंसा-हत्यामे विश्वास करैए
एकैसम सदी वैज्ञानिक युगकेँ
आन्हर बनि कलंकित करैए
धमियाँ-ओझा-गुणी भगता-भगतिनियाँ
जंतर-मंतरपर विश्वास करैए
आँखि रहितो अखनि धरि लोक
आन्हर बनि अन्हरा कहबैए।
❍

भाग भरोसे

कोनो काज एना नै होइए
सोचल समझल काज बनैए
पूर्ब नियोजित मनमे ठानैए
बिनु जानि बूझि हानि होइए
गलत सोचसँ राह भटकैए
मान-सम्मानपर ठेंस पहुँचैए
जेहेन मन ओहेन काज होइए
कर्मक फल ओहने पबैए
सोचि समझि जँ हुअए काज
अहित कम, हित काज होइए
काजे लेल दुनियाँ बनल-ए
काज कोनो नै छोट-पैघ होइए
छोट-पैघ तँ कर्मसँ बनैए
कर्मक फल अवश्य भेटैए
राज-रंक हुअए वा फकिर
सत् छी कि झूठ से कियो नै बूझैए
सबहक हित ईश्वर करैए
ईश्वर बिनु नै पत्ता हिलैए
सभ किछु नाश्वर अमर नै होइए
सत्य डगर कठिन होइए
मुदा सत् कर्मसँ विजय भेटैए
अपन काज अपना लेल सभ करैए
जे काज लोक दुनियाँ लेल करैए
कर्मवीर उहए कहबैए
सूरवीर-धर्मवीर-कर्मवीरकेँ

तीनू लोकमे जगह भेटैए
भाग्य भरोसे नै किछु होइए।

❍

फूल-पत्ता

फूल तँ फूल होइ छै
पत्ता ने कोनो कम होइ छै
बिनु पत्ता ने फूल फुलाइ छै
पत्ता संगे फूल रहै छै
जहिना दुख-सुख संगे होइ छै
बिनु पत्ता नै फूलक शोभा होइ छै
पत्ता फूल संग काटो होइ छै
काट फूलक रच्छा करै छै
सुखक संग फूल दइ छै
दुखक संग पत्ता काँट दइ छै
फूल-फड़क इच्छा सभ करै छै
पत्ताक उपैछा करै छै
फूल तँ फूल होइ छै
पत्तो ने कोनो कम होइ छै।

❍

भदबा

तीस दिनक मासमे
छह दिन भदबा रहै छै
साल भरिमे
बहत्तरि दिन होइ छै
लोक कहैए भदबाकेँ
काजमे बाघा करैए
एहेन कोन बाघा
जइसँ मनुखे प्रभावित होइए
धरतीपर लाखो जीव होइए
केकरो भादबा नै बाघा करैए
मुदा मनुखकेँ महिनेमे
छह दिन केना हानि करैए
धरती सूर्ज-चान नक्षत्र
सभ दिन अपना गतिए रहैए
प्रकृति अपन रचना करैए
एहेन पैघ काजकेँ
भदबा कहाँ रोकैए
भदबामे जनम-मरण होइए
तखनि भदबा किए नै रोकैए
भदबामे काज अशुभ होइतै
जखनि भदबामे दोख होइतै
तँ सभ काज भदबामे रूकि जइतै
नै भदबामे खेती होइतै
आ ने पेट भरि कियो खइतै
तहूमे भदबा बाघा करितै
भदबाक नै कोनो दोख छै

सभ दोख मनुखेकेँ छै
अपन स्वार्थमे आन्हर बनि
भदबाकेँ बदनाम करै छै
भदबा कोनो बाधा होइतै
सृष्टि-वृष्टिकेँ रोकि दइतै।
❍

बाबा बले फौदारी

की केलौं की पेलौं
जेहेन करब तेहेन पएब
बाबाक थैली भरोषे
नै चलत कोनो काज
अपना भरोषे होइ छै काज
जौं बाबा भरोषे
फौजदारी लड़ब
तखनि पराजय हएत
जे काज जहिना हेतइ
ओहिना ने करए पड़त
अनका भरोषे नै होइ छै काज
अपन काज जौं अपने करब
तखनि प्रगति दिन-राति हएत
स्वावलंबी जाधरि नै बनब
ताधरि परजीवी बनल रहब
की करब सोचि करब
समए संग काज करब
तखनि जिनगीक महत रहत
वर्त्तमानमे करब तँ भविस बनत
भूत तँ बीत गेल वर्त्तमानपर
भविस उज्जवल रहत
संसार काजसँ चलैए
जाधरि अपन काज
अपनासँ नै करब
ताधरि आत्म निर्भर नै बनब
आत्मनिर्भर भेनाइ

सबहक कर्त्तव्य बनैए
नै तँ एक-दोसराक संग
जिनगीक पिसाइत रहैए
अपन जिनगीक भारसँ
लोक स्वयं दबल रहैए
दोसराक भार केना सहैत रहैए
दबि-दबि जिनगी मरैत रहैए
की कहब कहल नै जाइए
से हाल प्रमात्मा जनै छथि
अपन विकास जौं सभ करत
केकरोपर नै निर्भर रहत
सभ सुखी, दुखी नै कोइ रहतै।

केकरा ले कानब

हाल-चाल की कहब
जेकरा ले कनै छी
ओकरा आँखि नोर नै
अपन हारल की कहब
दुख कियो थोड़े बाँटि लेत
सुखक साथी सभ बनै छै
दुखमे जानल अनजान होइ छै
केकरा ले कानब
के हमर नोर पोछि देत
सभ देखि-देखि मुँह चोरबैए
धीरज देनिहारो नै भेटैए
हमरे देखि हँसैत रहैए
जहिना जरलपर
नून छिटि घा बढ़बैए
केकरो देखिनिहार कोइ ने होइए
जनए देखै छी अन्हारे रहैए
मतलबी यार तँ बहुतो भेटैए
दुनियाँमे केकरो कोइ नै
स्वार्थमे एक-दोसरकेँ लूटैए
केकरा कहबै के पतियेतै
जेकरे कहै छी वएह हँसैए
केकरा ले कानब
वएह लतियबैए।
❍

परिवर्त्तन

पल-पल क्षण-क्षण समए बढ़ैए
क्षणे-क्षण मौसम बदलैए
दिन-बदलि राति बनैए
राति बदलि दिन कहबैए
खास मौसम ऋृतु कहबै
सभ ऋृतु बदलैत रहैए
कल-कल छल-छल नदी बहैत
सागर मिलि महासागर बनैए
काल बदलि युग बदलैए
युगक संग सभ किछु बदलैए
बदलि-बदलि नव पुरान होइए
प्रकृति बदलि आकृति बदलैए
तन-मन बदलि चोला बदलैए
परिवर्त्तन संसारक निअम छै
उनटि-पुनटि संसार चलै छै
करम-धरम नीति बदलै छै
बदलि-बदलि जिनगी चलैए
अहिना जँ सृष्टि बदलि जाएत
तँ ई संसार केना चलत
सभ किछु बदलितो
सुरुज-चान कहाँ बदलैए।
❍

माइयक ममता

माइयक ममताक नै अछि जोर
नअ मास धरि गर्भमे पालि
तीन साल धरि कोरामे खेला
झूला-झुलाबै लोरी सुना
अँचराक छाँहसँ दुख बचा
जिनगी भरि अपन ममतासँ
धीया-पुताकेँ दीर्घायु बनाबै
भगवानक ममतासँ बेसी
माइयक ममता सुख पहुँचाबै
भूखल-दुखलमे छाती लगाबै
माइयक ममता अछि बेजोर
सुक्खक खान माइयक ममताक
नै अछि कोनो मोल तोल
सागरसँ गहींर माइयक दिल
धीरज अटल हिमालय सन
जे सुख माइयक अँचरामे झाँपल
बच्चाकेँ कोरामे मिलै छै
ओ सुख ने स्वर्गोमे मिलै छै
माइयक ममताक नै अछि
दुनियाँमे कोनो जोर।
❍

परदेशिया पाहुन

आएल पहुना बाटे अँटकि गेल
की गामक बाट भूलि गेल
मन उपकैए झाँकि-झाँकि देखितौं
आकि बाट चलि दूर देखितौं
ओर-छोर नै देखै छी
लगैए पहुनाक बाट छूटि गेल
कि दिलमे कोनो कचोट भऽ गेल
कि करब किछु ने फुराइए
दिन-राति मन घबराइए
कि हमरामे कोनो दोख बुझाइए
जानि-मानि ने तँ भेल कोनो हानि
मान-सम्मानमे जँ कोनो कमी भेल
तँ हमरा कोनो उपरागो नै देल
बिनु अपराध पाहुन भूलि गेल
हमरासँ किए रूसि गेल
सभ दिन तँ पहुना लेल
कोन-कोन करम ने करै छी
पहुना परदेशिया जखने भेल
अपन घर अंगना भूलि गेल
कि कोनो सौतिनियाँ संग लगि गेल
ओज-टोनसँ मन मोहि लेलक
आएल पाहुन किए बाट भूलि गेल
पहुना पराया ने तँ बनि गेल
दिन-राति सुरता पहुनापर लगल-ए
सूरता करिते होइए मूर्छा

देहक खून सुखि पानि बनैए
पहुना यादि रहि-रहि बनैए
गौना पहुना किए करैलौं
ऐसँ नीक कुमारिए रहितौं
पहुनाक फेरिमे कहियो ने पड़ितौं
दिलक रोगसँ दूरे रहितौं
किए एहेन दुख जुआनीएमे सहितौं
पाहुन जँ परचट्टा हेतै
अपन जिनगी परदेशमे गमेतै
केना कोइ पहुनापर विश्वास करतै
अपन जुआनी-जिनगीकेँ नास करतै।
❍

धरतीक सुख

ऋृतुराज वसंत
धरतीपर पहुँचल
सोलह श्रृंगार करैत
दुलहिन सन सजल धरती
पगलाएल भौंरा नाचि-नाचि
करए मधुपान अविराम
चिड़ै चहकए कोइली कुहकए
करए आगमन मदन रति
सुआगतमे वसंत अभिनंदन करए
आएल अतिथिक मधुपान करबए
स्वर्गसँ उतरि धरतीपर
परी सभ मिलि सुआगत गीत गबए
देखि देवगण गुणगान करए
सबहक दिल ललचाइ छेलै
बेर-बेर धरतीपर मेहमान बनैत
एहेन सुन्दर नै छै देवलोक
धरतीक सुख स्वर्गसँ सुन्दर
जे सुख मनुककेँ मिलै छै धरतीपर
देवोकेँ नै नसीब होइत स्वर्गमे
धन्य अछि ओ पावन धरती
बेर-बेर वसंतक बहार मिलए
फूल-मंजर झुकि-झुकि
सभकेँ अभिनंदन करए।
❍

सौनक राति

झर-झर बरसै बदरिया हो रामा
एबकी सवनमा
बिजुरी चमकै मेघ गरजै
थर-थर कापए वदनमा हो रामा
झर-झर बरसै बदरिया हो रामा
एबकी सवनमा।
पिया निरमोहिया बड़ निरदैया
जानए ने कोनो मरमुआ हो रामा
झर-झर बरसै बदरिया हो रामा
एबकी सवनमा।
सओनक अन्हरिया चमकै बिजुरिया
पानिक बुन्नसँ भिजै वदनमा
भीजल तन राति काटब केना
झर-झर बरसै वदरिया हो रामा
एबकी सवनमा।
भीजल बदनमा चढ़ल यौवनमा
सिहकए पवनमा तरपाबए सजनमा
झर-झर बरसै बदरिया हो रामा
एबकी सवनमा।
चढ़ल यौवन दरिया सन उमरल
पिया बिनु तरसै नयनमा हो रामा
झर-झर बरसै वदरिया हो रामा
एबकी सवनमा।
❍

लोभी भोम्हरा

खिलल फूल देखैत
भोम्हरा मुस्कीआइत
गुनगुनाइत डड़ैत
घुमि-घुमि फूलसँ
करै गुप्त बात
रसपान करैत
भूलि गेल अपन गाम
बिन जान पहिचान
लोभी भोम्हरा करै गान
काँटक नै कोनौ परवाह
दिन रातिक नै कोनौ
ठेकान पहिचान
फूलक कोमल पंकुरीमे
कैद पड़ल सुनशान
फूलक बीच भोम्हरा
छोडै अपन मधुर तान
तितली देखि बढ़ाबए शान
फूलक सुगन्ध उड़ै
धरती सँ आसमान
बढल प्रेम देखि
फूल कहलक भोम्हरासँ
किएक बनल छी अहाँ
एतेक हमरा पर मेहरवान
भोम्हरा कहलक मुस्कीआइत फूलसँ
अहाँ छी हमर दिलक पराण

अहाँ बिन हम तेजब पराण
तीनु लोकमे फूल महान्
देवतासँ पहिले
हम करै छी रसपान
सभ देवताकेँ अहाँ
रखै छी मान
खुशीमनसँ अहाँ
हमरो करू कल्याण
दिअ हमरा मधुपान
ता धरि हम करै छी रसपान
अहाँ सँ अछि हमरा
जन्मे सँ जान पहिचान
तै हम छी अहाँ पर मेहरवान
हम बनल छी अहाँकेँ दीवान।
❍

भोरक क्षण

भोरक क्षण
मन्द मन्द हवा बहै
प्रातक संकेत सँ
चिड़ै-चुनमुन करैत
नव जिनगी पावैत
नील गगन पर
पंख खोइल
चारूकात भ्रमण करैत
स्वतंत्र जिनगी बिताबै
शीतल पवन उमंग जगाबै
फूलक सुगन्ध गमकै
पूरब ओरसँ
दिनकर दीनानाथ
अंधकार चिरैत
लाल-लाल प्रकाश पूँजसँ
अम्बर द्यरा पसारैत
बिन सोपान गगन चढै
नव जिनगी पाइबि
सभ जन हर्ष मनाबै
फूल मंजर पर
मधुकर ताडंव नृत्य करै
सौरभ सुगन्ध अविराम
अनन्त सृष्टी वृष्टि करै
स्वर्गक सुख पाबै
नित्य होएत सुखद विहान

भोरक क्षण... ।

❍

गरीबक मान

गरीबक राखू सदा मान
गरीबक दिलमे बसै भगवान
कहियो नहि करियो
हुनकर अपमान
गरीबमे अछि उर्जाक खान
हुनकँ मेहनतिसँ
बनैत अछि दुनियाँ महान्
गरीबक दिल में बसै भगवान...
गरीबकँ सतेलासँ
तीन हानि होएत
धन, धर्म, अभिमान
नै मानवतँ देश बनत कंगाल
रहि-रहि होएत भूचाल
गरीब अपन पसीनासँ
सींचैत अछि देशक कोना-कोना
देशक विकासमे
बहबैत अछि खून-पसीना
हुनकँ करियो मान सम्मान
गरीबक अछि देशमे हरिदम काम
बिनु गरीब नै होएत काम
गरीबक दिलमे बसै भगवान...।
❍

माए

माए अहाँ बिना नै कोइ दोसर
अहाँ बिना जगत भऽ जाएत बेघर
अहाँक हृदए सागरसँ विशाल
दयाक सागर बनल छी अहाँ
ईश्वरसँ बेसी छी अहाँ महान्
नै कोनो दूजाभाव अछि अहाँक हृदैमे
सभकेँ हृदए लगौने छी समान
धरतीक रखै छी मान
नि:स्वार्थ पालन करै छी संतान
माइक ममता ईश्वरसँ महान्
अहाँक दूधक नै अछि कोनो दाम
अहाँक गोद स्वर्गक समान
अहाँक दर्शन सभ तीर्थक समान
सभ देवतासँ अहाँ छी महान्।
❍

हमर गाम घर

हमर गाम घर
अदौसँ उपेक्षित
नरकक जिनगी
बितबैत गामवासी
गाँधी जीक सपना
रामराज टूटि गेल
जे कहने रहथिन
देशक आत्मा
गाम घरमे बसैत अछि
मुदा, गामघरक
दुर्दशा नै देखल
नै बाजल जाएत अछि
टुटल घरमे
टपकैत पानि बुन्ने-बुन्ने
सिर बँचेबाक नै
कोनो उपाए अछि
घरसँ निकलैत
कादो भरल सड़क
थालक दुर्गन्ध दम लेत
सड़कक नामो निशान नै
साफ पानि कत्तौ नै
मिलैत जे पराण बचाएब
दिन भरि काज केलौं
मुदा, भरि पेट खेनाइक
नै कोनो इंतजाम।

अनहरिया राति
कहब केना
साँप बिच्छूक सेनासँ लड़ब केना
प्रकाशक नै कोनो उपए
मटिया तेल बिचौलिए पी जाए
जखनि बिजली गाम-घरसँ
रहैत अछि बिलाएल
नैना-भुटका केर जिनगी
सेहो होइत अछि बेहाल
पढ़बाक इच्छा अछि
मुदा, स्कूलक दशा
अछि दुर्दशा कुबेवस्था
शिक्षककेँ पढ़ेवाक
नै देखै छी इच्छा
जखनि देशक जनता
सत्तरि प्रितशत गामेमे
जिनगी बितबैत अछि
तँए सत्तरि प्रतिशत आमद
सरकार किएक नै
गाम घरपर खर्च करैत अछि
देशक सभ धन (आमद)
शहरेपर व्यय करैत अछि
सभ सुविधा नगर शहरमे
जखनि होएत अछि
किएक सरकार गामवासीसँ
शौतेला बेवहार करैत अछि
शासक, प्रशासक, संतरी-मंत्री

गामवासीसँ बेमुख बनल अछि
खून चूसबाक सोभाब
जोंककेँ होएत अछि
मुदा, मनुख मनुखक
खून चूइस-चूइस
गाम-घरकेँ नरक बनौने अछि
हमर गामघर
अदौसँ उपेक्षित अछि।
❍

अगिलगी

एके रातिमे
क्षणे-मे-क्षणाक भेल
गामक पछबरिया कातसँ
गोहालीक घरसँ आगि उठल
पछिया हवाक झौकासँ
क्षणे-मे-आगिक लपेटि
ऊपर उठैत घरक-घर
सुड्डाह करैत आगू बढ़ैत
गामक घर धधकैत जरैत
पुरे गाम सुड्डाह भऽ गेल
आगिक विभिषिका बढ़ैत गेल
गाए, बरद, बकरी बच्चा बेदरू
सुतलेमे जरि मरि गेल
लत्ता-कपड़ा बर्त्तन-बासन
अन्नसँ भरल कोठी बखारी
जरैत देखि छातीमे
मुक्का मारैत नोर बहबैत
हल्ला करैत जोर-जोरसँ कहैत
'जान बचाबऽ हौ गौआँरी'
देखैत-देखैत गाम बिलिन भऽ गेल
गामक निशान मिट गेल
चिन्ह-पहन्हि हटि गेल
सभ एक दोसरकेँ
जानक दुश्मन बनि गेल
अपन जान बचाएत कि
दोसरकेँ जान बचाएत?

काल रूप आगि विकराल
बनल अछि चारूकात
भागि पड़ाइत कोने जाएब
चारूकात आगिए-आगि
माल-जाल मरल-पड़ल
आगिक लपेटिमे सभ पड़ल
देखते-देखते पुरे गामक
नाम-निशान मिट गेल
क्षणेमे गामक लोक
कंगाल बनि गेल
एक्के रातिमे
क्षणेमे छनाक भेल।
❍

काली मैयाक गीत

काली मैया
हे... ।
कतेक नीनमे सूतल छी अहाँ
लाली पलंगिया हे
सेवकपर होइयो ने सहाय
सेवक... ।
अहाँ बिनु हम छी निसहाय
रणे-बने भटकै छी हम
कहिया करब हमरापर दया
बगियासँ फूल चुइन हम
अहाँक मंदिर देलौं चढ़ाय
काली मैया हे
कतेक नीन... ।
बेली चमेलीक गजरा बनेलौं
अड़हुल फूलक माला चढ़ैलौं
कतेको गहबर पूजा ढारलौं
नीन तोड़ि जागू
काली मैया हे
दुखिया सेवकपर करियौ ने दया
काली मैया हे
कतेक नीन... ।
आशीष वचनसँ सेवककेँ
सभ संकटसँ दियौ ने उबारि
काली मैया हे
सेवकपर होइयौ ने सहाय
काली मैया हे

कतेक नीन सूतल छी अहाँ
लाली पलंगिया हे...।
❍

हमर बिखरल समाज

हमर बिखरल समाज
केना होएत एक ठाम
जाति-पातिसँ बिखरल
ऊँच-नीचसँ बिगड़ल
छुआ-छूतसँ अड़ियल
हम सभ जातिसँ छी मानव
मुदा, मानव-मानवसँ
करै छी दानवसन बेवहार
तखनि समाजमे बढ़ैए अतियाचार
नै होएत समाजक काज
बिखरल समाजसँ
नै होएत कोनो विकास
सभ भेद-भाव बिसरि कऽ
बनाऊ एक रंगक समाज
जइसँ हएत मानवक विकास
करू प्रयास बनाऊ नव समाज
सभ मिलि करब देशक विकास
हमर बिखरल समाज...।
❍

चिड़ै चुनमुन्नी

चिड़ै चुनमुन हमरा सबहक
दुश्मन नै दोस छी
राखियो ओकरोपर धियान
नै हतियो ओकर पराण
राखियो दया नै लियो जान
ओहो करैए हमरापर एहशान
कीड़ी-मकौड़ी खाए कऽ
बँचबैत अछि अपन पराण
नै बिगाड़ैत अछि किनको काम
जइसँ होएत अछि हमरो कल्याण
के करैत अछि सेवादान
चिड़ै-चुनमुन प्रकृतिक प्रति
सदा सजग रहैत अछि
सूचना दऽ करैत उपकार
हमसभ मानव करियो विचार
नै करियो चिड़ै-चुनमुनक शिकार
चिड़ै जातिपर
नै करियो अतियाचार
नै तँ प्रकृति करत
मानवपर प्रहार
चिड़ैपर किरयौ पुन: विचार
नै तँ उल्टे भऽ जाएत
मानवक संघार।
❍

माइक लाल

हम छी माइक लाल
माइक सेवा नित्य करै छी
सभ दिन करै छी सौ-सौ प्रणाम
मांगै छी हम अभयदान
हमरा दिअ एहेन वरदान
जइसँ करब दुनियाँक कल्याण
हमरा अछि दूटा माए
जननी आ मातृभूमि
दुनूकेँ करब सेवादान
दुनियाँमे नै करब
अपन माएकेँ बदनाम
रखब जगतमे सदामान
सेवा करैत देब हम बलिदान
माए हमरा माथपर
तिलक लगा दिअ
दुश्मनसँ लड़ब सीना तानि
कहियो ने हेतै दुश्मनकेँ चैन
होश-बेहोश कऽ देबै हम
छठिक दूध यादि करैबै हम
दाँत तोड़ि बनेबै दन्तहीन हम
हम छी माइक लाल...।
❍

के गरीब?

के गरीब?
जे कड़ोरोसँ खेल करैत
काला धन जमा करैत
लहना लगानी ब्लैक-मेलक
तैयारी नित्य अछि करैत
ढोगी बनि तीर्थक मजा लइत
देश विदेश भ्रमण करैत
सभ सुविधासँ लैश रहैत
कहितो लाज नहि होइत
हाथ जोड़ि सभकँ कहैत
हम छी गरीब
मुदा, के गरीब?
गाम घरक सुपर नेता
ठाट-बाटपर हुनके धाख
चास बास चारूकात
खेत, वाड़ी-झाड़ी, गाछी
जेनए देखियो हुनके कित्ता
समए पाबि रंग बदलि
गरीबसँ करैत धक्का
आगू बढ़ि करै गरीबक हकमारी
बी. पी. एल.मे नाओं अगाड़ी
सभ लाभ लैत अछि सरकारी
हाथ जोड़ि सभकँ कहैत
हम छी गरीब?
❍

नैनाक खेल

नैना-भुटुका खलैए खेल
अपनामे करैए ठेलम-ठेल
मारि-पीट करैत खेलैए खेल
खेल-खैलैत जँ होइत झगड़ा
उठा-पटक करैत रगड़ा
गरदा झारि करैत मेल
सभ मिल करैत खेल
खेलसँ जाति-पाति मिट गेल
जेना पानि-पानि एक भऽ गेल
नै कोनो मनमे अछि मइल
एकताक पाठ पढ़ल गेल
देशक लेल सोच बदलल गेल
देशक विकास लेल खेलब खेल
नैना-भुटका खलैए खेल...।
❍

कोइली कुहकै आमक डारि

कोइली कुहकै आमक डारि
सुनि हमर मनुआ घबराइ
पिया हमर रहितए तँ
धीरज दैताए बन्हाइ
अन्हरिया राति हम
बाट देखैत दुनू आँखि-निहारि
इजोरिया राति हम चान देखैत
चकबा-चकोर बनि जाइत
चन्दा बादल लूक-छूप खेले
पिया रहितए तँ हमहूँ
संगे खेलतौं ओहने
कोइली बोलीसँ हमरा
दिलमे लगैए गोली
पिया रहितए तँ किछु कहबो करितौं
अनका केना किछु कहबै
पिया परदेशिया बर निरमोहिया
कहिया बनत हमर रखबैया
कोइली बोली सुनि हमर
देह भए जाइए बहिर
केकरा कहबै ई दुखक बात
कोइली कुहकै आमक डारि।।
❍

नींदिया बैरी भेल पहुना

नींदिया बैरी भेल पहुना
वाली उमर हमर भेल गौना
हमरा अहाँ किएक बिसरलौं अहिना
चिट्ठिया-पतिया बहुतो भेजलौं
एको नै धुमेलौं सनेस
कोन दोख हमर अछि पहुना
कतैक फागुन बीत गेल अहिना
सोलह बरख हमर उमरि बीतैए
सजल पलंग हमर सुना पड़लए
सभ दिन सजि-धजि अहाँक आशमे
अपन आँखिक नोर बहबै छी
मन पड़ैत अहाँले सोलह श्रृंगार करै छी
रस्ता बहारि बाट अहाँक जोहै छी
सूतल छी हम सजल पलंगपर
अहाँक बिनु नीन्न नै भेल
सोलहसँ अठारह बीत गेल
बीस बरस तक ऑचर बान्हि हम
अपन यौवन रखलौं सम्हारि
धर्म सतीत्वक पालन करैत हम
जिनगी बीतबे छी दिन-राति
कोन बैरिनियाँ नजर लगेलक अहाँकेँ
जे हमरासँ नजरि छिपौने छी
अहाँक आशमे हम पहुना
हमर जिनगी बितैए सुना-सुना
पहुना कतेक दिन जिनगी बिताएब अहिना
निंदिया बैरी भेल पहुना...। ❍

पागल प्रेमी

वसंतक मास मधुराएल अछि
भौरा मंजरपर गुंजन करैत अछि
महुआक फूलसँ रस टपकैत अछि
फागक मन्द हवा मन ललचाबैत अछि
चहु ओर चहकैत चिड़ै चुनमुन
फूलक सेजसँ धरती सजल अछि
ओसक कण मोती बनल अछि
मुदा हमरासँ हमर साजन बिगड़ल अछि
चिड़ै चुनमुन हमरा जगबैत अछि
चन्दाक चाँदनी बादलसँ मिलैत अछि
साजन बिनु हमर सुहाग उजड़ल अछि
जेना शराबी शराब पी कऽ पड़ल अछि
राति-दिन हमर मन घबराएल रहैत अछि
आशा हमर निराशामे बदलल अछि
साजन बिनु हमर मन पागल बनल अछि
पागल प्रेमी नालायक बनल अछि।
❍

कोसीमे समाएल जिनगी

बालुक ढेरपर हमर गाम समाएल
कोसी पेटमे हम छी बिलाएल
कड़ोरो दिलक बनेने अछि फटेहाल
मैथिली छी हमर भाषाक पहिचान
मुदा,
कोसी बनल अछि विकासक बाधा
मैथिलीक पोथी अछि कोसीमे समाएल
पढ़वाक नै अछि मौका कोसी दैत अछि धोखा
जिनगी बनल अछि हमर कंगाल
झौआ, पटेर, काश, खगरा हमरासँ करैए रगड़ा
बाल बच्चाक जिनगी बालुमे समाएल
की खाएब की पीअब सोचेत छी पचताइत
जखनि खाएब पीअब नीक
तखनि सोचबो करब नीक
अखनि तँ नै अछि गाम घरक ठेकान
जान पहिचानसँ दूर रहे छी
ई कोसी हमर बनल अछि जंजाल
हमर भविस बालुपर बनल अछि बेकार
तैयौ नै अछि कोसीकेँ दया
बाढ़ि-पानि अछि हमरा करैत हानि
गाम घरक ने कोनो ठेकान
कोसीमे घुमैत हमर जिनगी बनल अछि घुमन्तु
हिंसक जीव-जन्तु बीच बनल रहै छी रमनतु
हमर ने कोइ बाटैए दु:ख
सरकारो बनल अछि बेमुख
हम छी बेसहारा कोनो नै अछि सहारा

हम बाल-बच्चा संग बनल छी बेचारा।
❍

हइकू/ टनका

भरल नदी
नाह खेबै खेबैया
पानि बहैत
बाढ़ि पानि भरल
केना प्राण बँचत।

मोर नचैत
मोरनी संगे-संग
बादल बुन्न
प्रेमक दृश्य दैत
मन हर्षित करै।

कारी बादल
बरखा बरसैत
बून्न गिरैत
बिजली चमकैत
राति-दिन झरैत।

आम रंगीला
स्वाद छै अलबेला
पीला रसीला
लालौन सिनुरिया
सभकैं ललचाबै।

लाल गुलाब
संगे काँट लगल
रूप गंधसँ
सभक दिल बसै
भौँराकेँ ललचाबै।

पछताइ छी
पथपर चलैत
मौतक संग
नरको नहि बास
केना करब आस।

टुटल खाट
सूतल छी चैनसँ
दुपहरमे
करबट फेड़ैत
पेटकुनिया दैत।

पानिक बुन्न
मोती सन चमकै
धरतीपर
माइटसँ मिलैत
नदी रूप बनैत।

चिड़ै चहकै
चुनमुन फुदकै

पंख खोइल
नव पथ बनाबै
आजादीसँ भरमै।

गंगा भरल
अमृत सन जल
जिनगी दैत
अपने सेवककेँ
गोदमे बसाबैत।

बेटा-बेटीमे
नहि कोनो अंतर
परेशानी की
नहि लेब जंतर
किए हएत अंतर

दूजक चाँद
घीरे चढ़े अकास
ओहिना सिखू
पुर्णिमाक चाँदसँ
बेसी करू विकास।

खेतक काज
राखै जगक मान
नै अपमान

खूब कमाउ नाम
धान-पान-सम्मान।

गाएक दूध
दही-गोत-गोबर
घी छै अमृत
मिलिते पंचामृत
जे पिबै बनै देव।

चैतक रौद
तपाबै माटि-पानि
पछिया हवा
पकै जअ-गहुम
बहारै धूर-कण।

फूलक डारि
भौरा चढ़ै दू-चारि
गमकै बाग
वसन्ती हवा बहै
कोइली गाबै गीत।

कारी काजर
आँखि देत सुखाय
कारी बादल
बरखासँ डुबाय
मुखरा देत बिगाड़ि।

सत्य वचन
अपन हुऐ हानि
मिले सम्मान
नहि छोड़ब बानि
दोसरक कल्याण।

झाड़ू बहारै
कुड़ा-कचड़ा धूर
सत्य भगाबै
मन बसल मैल
पाप नै धुले पानि।

धर्मक सोरि
पताल पसरल
वीरक यश
तीनू लोक पहुँचै
अधर्मसँ अहित।

चौबीस घंटा
दिन राति बनैत
सात दिनक
सप्ताह बनैत छै
बारह मास वर्ष।

फूलक बाग
सिंचैत अछि माली
इन्द्र सिंचैत
धरती उपवन
अन्न उपजै खेत।

टुटल दिल
प्रेमसँ जुटैत छै
सूखल नदी
जलसँ जिबैत छै
क्षणे आगू बढ़ै छै।

चहकै चिड़ै
वन-उपवनमे
गमकै फूल
बागमे झुलि-झुलि
देखि चान हँसैत।

नेना-भुटका
खेलै गुड़िया खेल
पानिसँ मेल
जाति भेद भुलि
पढ़ै एकता पाठ।

पान मखान
मिथिलाक सम्मान
धानक खान
जनकपुर धाम
मिथिलाकेँ प्रणाम।

पढ़ैत सुग्गा
कहैत राम-नाम
पिंजड़ा बन्द
रहैत छै गुलाम
अछि संत समान।

साँच बजैत
जग मारल जाय
झूठ बजै तँ
जगत पतियाय
नै छोड़ू साँच वाणि।

नीमक गाछी
सूतल रही खाट
सपनैति छी
चलितो पछताति
नदी तटक बाट।

दु:खक बात
नै कहियो केकरो
सुनि हसँत
हानि करत मान
नै मिलत सम्मान।

जीवन दैत
जल जीव जन्तुकेँ
शीतल चाँद
चाँदनी छिटकैत
शोभा छै धरतीकेँ।

आमक डारि
झूला झुलैत राधा
कृष्ण पुकारै
संगे-संग झूलब
वृन्दावनक झूला।

पानक पात
मखानक प्रसाद
स्वर्गक बास
नदी तटक चास
नै होएत विश्वास।

माइक गोद
धरतीकेँ बिछौना
फूलक सेज

सुख पाबै बेजोर
नै मिलै परलोक।

बाँसक वंशी
स्वर बजै मधुर
माया पसारै
स्वर छै अनमोल
सुनै सभ विभोर।

कारी काजर
मुखड़ा बिगारैत
कारी कोइली
मधुर गीत गबै
सभकेँ ललचाबै।

चाँदनी राति
कहै मनक बात
प्यासल प्रेमी
प्यास बुझाबै राति
दिलसँ करै बात।

देव धर्मसँ
ऊपर माए-बाप
तीर्थक खान
धरती माता अछि
हिन्दुस्तान महान्।

मान घटै जँ
नित्य जाय सासुर
मान बढ़ै जँ
करै अतिथि सेवा
सेवासँ मिलै मेबा।

कालक मुँह
खुलल छै विशाल
क्रमश: सभ
समए बचै नहि
कोय एहि चक्रसँ।

चमेली फूल
गमकै दिन-राति
गजरा बनि
देवौकँ नहि चढ़ै
नारी सजाबै केश।

कमल फूल
बिराजै लक्ष्मीजी
सुख शान्ति दै
अन्न, धनसँ भरै
सभक छै कल्याण।

सौनक मास
जलक बुन्न पड़ै
आसमानसँ
बेंगक बाजा बजै

खन्ता डबरा भरै।

पानिक बुन्न
मोतीसँ महग छै
मोतीसँ नहि
मिटै भूखक रोग
पानि जिनगी दैत।

मैथिली भाषा
मौध सन मधुर
जे नहि पढ़ै
वो बाजितौ लजाय
पबै पढ़िते मान।

मौध मखान
रेहु माछक खान
पानसँ मान
पाग सँ बढ़ै शान
मिथिलाकँ निशान

आमक फल
मधुर रसदार
फलक राजा
सभकँ मन भावै
सभकँ ललचाबै।

सौनक मास

रिमझिम फुहार
प्रेम बढ़ाबै
प्रेमीकेँ ललचाबै
गोरीकेँ तरसाबै।

मोनक बात
की कहब सजनी
समए नहि
की भेजब सनेस
दिल दर्दक क्लेश।

दिलक रोग
नहि कोनो इलाज
प्रेमक भूख
नहि मिटै धनसँ
नहि कोनो दबाइ।

चंचल मन
चित्त घबराइत
मन डोलैत
नयन सुखदाय
प्रेमी कहै लजाय।

सोना कंगना

पैर पयजनियाँ
नाचै अंगना
घूमि घूमि तकैत
हमर सजनियाँ।

फूलक डारि
झूलि सनेश दैत
देशवासीकेँ
सदा प्रसन्न रहुँ
देशक सेवा करू।

देशक सेवा
माइक सेवा करू
जिनगी भरि
धर्मक पालन छै
सबहक कल्याण।

सुइत उठि
माए-बाप गुरुकेँ
छुऊ चरण
नित्य बन्दन करू
कृपा करत देव।

पढ़ि लिखि कऽ
बनु ज्ञानीसँ दानी
करू देशक
विकास कल्याणक
रक्खू ऊँच तिरंगा।

सभ अपन
पराया नहि कोइ
सूरज चाँद
सभकेँ समझैत
एक समान हित।

राजा दुखित
प्रजा सभ दुखित
जोगिक दुख
दुखिया सँ छै बेसी
संसार अछि दु:खी।

सेवा करैत
पथपर चलैत
आगू बढ़ैत
झरना सन आगू
संघर्षसँ बढ़ैते।

खूनक दाग
छिपाय नहि पाबै
पापक भार
धरती नै उठाबै
सत्य करै से होय।

प्रात:क जल
पीबैत रहू नित्य
टटका फल
खाऊ जीबैत धरि
बनल रहु स्वस्थ।

रथक चक्का
उलटि चलै बाट
चाक् चलै छै
ठामे ठाम नचैत
दुनू करै दू काम।

बच्चा बेदरू
खेलैत संगे खेल
कखनु झगड़ा
कखनो करै मेल
पढ़ै छै पाठ एक।

खिलैत फूल
देखैत भौंरा नाचै
रस पिबैत
राति बितबै संगै
प्रेमक बात करै।

दिलक बात
की कहब सजनी
प्रेमक बाँध
सभसँ मजबूत
तोड़लौं सँ नै टुटै।

खूनक दाग
सभसँ अछि पक्का
मिटैत नहि
कारी दागसँ भारी
बड़ पैघ बीमारी।

सच्चा इंसान
ज्ञान धर्म ईमान
उच्च विचारि
मानवक श्रृंगार
कार्य करै महान्।

सूर्य रौंद सँ
धरती तैप तैप
शुद्ध होएत
सोना तपै आगिसँ
कर्म सँ तपै लोक।

मोछक मान
राखै छै घरवाली
सेवक करै
घरक रखवाली
गाए छै हितकारी।

दुर्जन साधु
नौकर बेईमान
कपटी मित्र
ई तीनू छी शैतान
क्षणमे लेत प्राण।

खाना खजाना
जनाना पखानाकेँ
पर्दामे राखू
जौं रखब बाहर
बिख बानि जाएत।

प्रीत नै जानै
ओछी जाति, नीन नै
टुटल खाट
प्यास नै धोबी घाट
सभ कहै छै बात।

बैल खींचैत
अछि काठक गाड़ी
मनुख खींचै
छै दुनियाक गाड़ी
की बनल लाचारी।

नीमक गाछ
करैत हवा साफ
दवा कऽ साथ।

गंगा किनार
तीर्थक जेना धाम
पवित्र स्नान।

अतिथि सेवा
देव धर्मसँ पैघ

मधुर सेवा।

सभ दिन नै
होइत छै समान
राजा आ रंक।

अमृत पान
जिनगी दैत अछि
अमर दान।

मोरक पंख
चमकै चटकिली
प्रेम जगाबै।

धनी बनब
सभकेँ इच्छा अछि
दीन किए नै।